अब पर्युषण पर्व भी बीत गया

वीर निर्वाण संवत् 2550 अथवा ईसवी सन् 2024 का पर्युषण पर्व भी बीत गया। आप सबने इस वर्ष भी परम्परानुसार धर्म के दशलक्षणों का चिन्तन/मनन करके एवं तदनुरूप आचरण करके अपने जीवन को धन्य किया होगा। आप सबके पुण्य कार्य की अनुमोदना।

हमारी समाज में पर्युषण पर्व के उपरान्त तीर्थ यात्रा पर जाने की परम्परा है। यथाशक्ति, सुविधानुसार श्रावक/श्राविकायें सपरिवार आस्था के केन्द्र निकट या दूर के तीर्थों अथवा गुरु की वन्दना हेतु जाते हैं। जिन-जिन स्थानों पर पूज्य संतों के वर्षायोग चल रहे हैं वहाँ भी उत्साह में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगता है। फलतः मैं कुछ सुझाव देना चाहूँगा।

1. यदि आप किसी ऐसे नगर में निवासरत है जहाँ किसी दूसरी कालोनी या मोहल्ले या जिनालय में दिगम्बर जैन संत वर्षायोग कर रहे हैं तो आप 1-2 सप्ताह या कुछ दिनों हेतु अपनी कालोनी में उन्हें आमंत्रित करें आपको गुरु भक्ति, आशीर्वाद का लाभ मिलेगा। आपके पड़ोसियों, साधर्मी कालोनी के निवासियों को प्रेरणा मिलेगा।

सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम्।

मित्रों के साथ मिलकर ही आमंत्रण देने जाये। अपने मन्दिर के ट्रस्टियों/पदाधिकारियों को जरूर विश्वास में लेवें।

2. यदि आपके नगर में कोई संत नहीं है तो आप समीपवर्ती तीर्थ या उस तीर्थ जहाँ कोई दि. जैन संत विराजित हो दर्शनार्थ जायें। तीर्थ पर संचालित योजनाओं, आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त कर विकास/जीर्णोद्धार योजनाओं या आहारदान के फंड में यथाशक्ति योगदान करें। तीर्थ की रक्षा में वहाँ आने वाले यात्रियों की संख्या की बहुत बड़ी भूमिका होती है। अतः तीर्थों पर बार-बार जायें।

3. यदि आप किसी तीर्थ के 4-5 कि.मी. की परिधि में रहते हैं एवं क्षेत्र पर अब तक कोई व्यवस्थित वृक्षारोपण नहीं हुआ है तो आप तत्काल वृक्षारोपण का कार्यक्रम बनावें, अभी बिलम्ब नहीं हुआ है। सितम्बर में वृक्षारोपण कर सकते हैं क्योंकि अभी भूमि में पर्याप्त नमी है। तीर्थ के पदाधिकारियों से सम्पर्क कर क्षेत्र की बाउन्ड्रीज पता कर लें। यदि पक्की बाउन्ड्री बनी है तो ठीक वरना निर्विवाद बाउन्ड्री पर निशान लगाकर, पत्थर गाढ़कर बाउन्ड्री तय कर लें, पश्चात बाउन्ड्री से 1-1.5 फीट अन्दर की ओर 10-15 फीट के अन्तराल पर गड्ढे कर लाइन से व्यवस्थित रूप से यथाशीघ्र वृक्षारोपण कर दे। इस प्रकार का वृक्षारोपण भविष्य में किसी निर्माण में बाधक भी नहीं बनेगा। 5-7 वर्ष में ये वृक्ष थोड़ा बड़े होकर स्वयं बाउन्ड्री का काम करने लगेंगे। पर्यावरण की रक्षा होगी, तीर्थ पर हरियाली एवं शोभा बढ़ेगी।

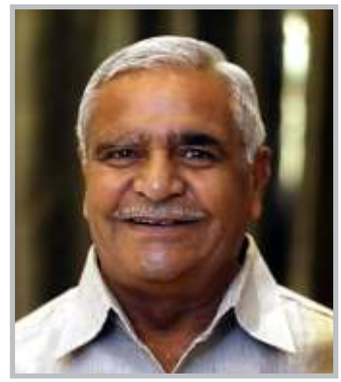

4. आप अपने से सम्बद्ध क्षेत्र के इतिहास, पुरातत्त्व एवं अतिशयों की जानकारी देने वाला 4'×6' आकार के बोर्ड का मैटर तैयार करें एवं पदाधिकारियों के माध्यम से क्षेत्र पर परिचय का बोर्ड लगवायें। ऐसा बोर्ड क्षेत्र पर आने वाले यात्रियों की श्रद्धा को विकसित करने में सहयोगी रहेगा। यदि कोई फोल्डर भी छपा सके तो और भी उत्तम रहेगा किन्तु इसके मैटर की पुष्टि क्षेत्र की कमेटी से जरूर करायें। इसकी एक प्रति अंचल एवं केन्द्रीय कार्यालय को भी भेजे। यदि मैटर अच्छा बन जाये सबको उपयोगी लगे तो 6-8 माह बाद इसे शिलालेख के रूप में भी परिवर्तित कर सकते हैं।

5. आप जिस तीर्थ की यात्रा पर गये हैं वहाँ देखे कि भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखी है या नहीं। यदि रखी है तो उसका सम्यक उपयोग (उचित स्थान पर रखी होने से) हो रहा है कि नहीं, यदि नहीं तो स्थान परिवर्तित करावे एवं यदि गुल्लक ही नहीं है तो आप अंचल के अध्यक्ष महोदय अथवा गुल्लक योजना के प्रभारी श्री हसमुख जैन गाँधी, इन्दौर (93021 03513) से सम्पर्क करें। गुल्लक योजना आपकी अपनी योजना है इससे तीर्थक्षेत्र कमेटी का प्रचार होने के साथ ही उसे सम्बल भी प्राप्त होगा।

वर्षायोग में साधनारत समस्त आचार्यगणों, पूज्य मुनिराजों एवं आर्यिका माताओं के चरणों में नमन/वन्दन तथा समस्त साधर्मी भाई/बहनों से विगत वर्ष की त्रुटियों हेतु क्षमा।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

चल-अचल जैन तीर्थों की सुरक्षा,
संरक्षण एवं संवर्धन ही लक्ष्य है हम सबका !

क्षमावाणी महापर्व के अवसर पर
गत वर्ष में
जाने-अनजाने में
अगर हमने आपका
दिल दुखाया हो तो

मन, वचन, काय से

उत्तम क्षमा

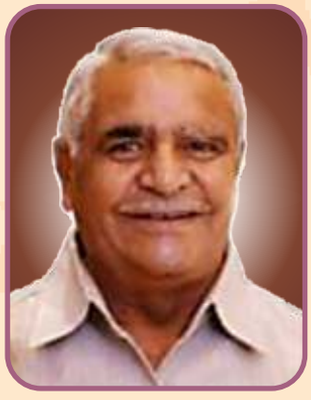

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढारी
राष्ट्रीय महामंत्री

प्रदीप जैन (पीएनसी)
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

सुरेश जैन (TMU)
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

नीलम अजमेरा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

विजय जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

संजय पापड़ीवाल
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

अशोक दोशी
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

जयकुमार जैन
राष्ट्रीय मंत्री

वीरेश सेठ
राष्ट्रीय मंत्री

हंसमुख जैन गांधी
राष्ट्रीय मंत्री

डॉ. जीवन प्रकाश जैन
राष्ट्रीय मंत्री

कन्हैयालाल सेठी
अध्यक्ष – पूर्वांचल

पारस जैन बज
अध्यक्ष – गुजरात अंचल

राजकुमार कोठ्यारी
अध्यक्ष – राजस्थान अंचल

जवाहरलाल जैन
अध्यक्ष – उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड अंचल

विनोद बाकलीवाल
अध्यक्ष – कर्नाटक अंचल

डी.के. जैन
अध्यक्ष – मध्यांचल

संजय ठोलिया
अध्यक्ष – तमिलनाडु, आंध्र,
केरला & पौण्डीचेरी अंचल

मिहिर गांधी
अध्यक्ष – महाराष्ट्र अंचल

प्रद्युम्न कुमार जैन
अध्यक्ष – दिल्ली अंचल

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार

सम्माननीय

बंधुओं-भगनियों,

जय जिनेन्द्र!

हर्ष एवं प्रसन्नता है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के समस्त अंचलों के अध्यक्ष पद के चुनावों की प्रक्रियाएं बड़े ही शांति एवं सामंजस्य पूर्वक संपन्न हो गयी हैं जिसमें सभी अंचलों के अध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। किसी भी अंचल में मतदान (वोटिंग) की आवश्यकता नहीं हुई है निश्चित ही यह हमारी एकता और अखंडता का ही प्रतीक है। सभी अंचलों के नवनिर्वाचित अध्यक्षों को मैं हार्दिक बधाईयां प्रेषित करते हुए सभी महानुभावों का भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, महापरिवार में हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। आप सभी के सहयोग से हमें भारत के कोने-कोने में विराजमान हमारी धरोहरें, हमारे तीर्थक्षेत्रों, प्राचीन जिन-मंदिरों, प्रतिमाओं का संरक्षण कर अपना पूर्ण कर्तव्य का निर्वहन करना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप का सहयोग हमें हमारे उद्देश्यों के प्रति प्रेरणादायी एवं उपयोगी होगा। हमारा सौभाग्य है कि हमारे पूर्वजों द्वारा इस विशाल रथ को हम तक सौंपा गया है अब हमारा परम कर्तव्य है कि इस रथ को गतिमान रखने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दें।

सर्व विदित ही है कि हमारे पावन प्रसिद्ध शाश्वत तीर्थक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी केस की सुप्रीम कोर्ट में अंतिम सुनवाई चल रही है लगातार दोनों पक्षों की ओर से दलीलें पेश की जा रही हैं और इस कार्य के लिए हम कोई कमी नहीं वर्तना चाहते हैं जिससे हमें हमारे केस में कहीं अड़चन पैदा हो। प्रत्येक सुनवाई के दिन हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अनेकों पदाधिकारी दिनभर कोर्ट में उपस्थित रहते हैं एवं वकीलों आदि से निरंतर संपर्क व बैठकें आयोजित कर केस की तैयारियों में तल्लीन हैं।

चूंकि इस कार्य के लिए अत्यधिक मात्रा में धन खर्च हो रहा है जिसका पूर्ण व्यय भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा ही किया जाता है। हम धन्यवाद करते हैं ऐसे सभी महानुभावों का जिन्होंने हमारी अपील पर अपनी चंचला धनलक्ष्मी का सदुपयोग करते हुए हमें मजबूती और साहस दिया है। मेरी समाज से विनम्र अपील है कि आप सभी पुरुष-महिलाएं, माताएं, बहनें युवक-युवतियां यह सम्मेदशिखर तीर्थ हम सबका है इसका संरक्षण हम सबको करना है और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की शक्ति हम और आप सब मिलकर ही हैं। धन को बार-बार कमाया जा सकता है परन्तु हमारी संस्कृति, हमारी पहचान, हमारे शाश्वत तीर्थ को यथावत रखने में हमारे सहयोग का अवसर बार-बार नहीं आयेगा, और हमारा दायित्व बनता है कि हमारे २४ में से २० तीर्थंकरों की इस सिद्धभूमि के संरक्षण के लिए हम समर्पित हो जावें।

पर्युषण महापर्व जो हमारे जीवन में दस धर्मों का आगमन कराता है, हमें अपने-आप से परिचित करता है, हमारी कषायों एवं विकृतियों से दूषित आत्मा को स्वच्छ कराता है, जो हमें क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आन्किंचन और ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाकर अपने अमरत्व का घूँट पिलाता है और हमें सिद्धों के समान सच्चे सुख में प्रवेश करने का अवसर देता है। इसीलिए तो इस पर्व को हम पर्वों का राजा भी कहते हैं। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का प्रथम दिन हमें उत्तम क्षमा का ज्ञान कराता है क्योकिं मोक्ष मार्ग की पहली सीढ़ी क्षमा ही है। इसीलिए हम सभी अंत में क्षमावाणी पर्व मना रहे हैं ऐसे परम पावन पुनीत अवसर पर मैं तीनों लोकों के समस्त जीवों के प्रति क्षमा का भाव रखता हूँ और सबसे क्षमा याचना करता हूँ। विगत वर्षों में मेरे परिचित अपरिचित किसी भी महानुभाव को अगर मेरे व्यवहार एवं वाणी से दुःख पहुंचा हो या दिल दुखा हो जिसके लिए मैं मन-वचन-काय की एकाग्रता पूर्वक आप सभी से क्षमा याचना करता हूँ और सभी के प्रति क्षमा का भाव रखता हूँ।

सबसे क्षमा, सबको क्षमा, उत्तम क्षमा !

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

सही सर्वेक्षण: पहली जरूरत

पर्वाधिराज महापर्व दशलक्षण की पूर्णता पर मैं आप सब पाठकों को बधाई देता हूँ। इन 10 दिनों में पूजन, भक्ति, सामायिक एवं आत्म चिन्तन से आपके भावों में जो निर्मलता आई है उसका तीर्थों के पक्ष में उपयोग करने हेतु समस्त आंचलिक अध्यक्षों को मैं एक खुला पत्र लिख रहा हूँ जिससे आप सबको इसकी विषय-वस्तु ज्ञात हो एवं आप भी माननीय आंचलिक अध्यक्षों के माध्यम से तीर्थ सर्वेक्षण में अपनी सक्रिय सहभागिता दे सकें। पत्र निम्नांकित है:-

प्रति,

1. *श्री पारस जी बज, अध्यक्ष-गुजरात अंचल*
2. *श्री संजय जी ठोलिया, अध्यक्ष-तमिलनाडु-पाण्डिचेरी अंचल*
3. *श्री राजकुमार जी कोठ्यारी, अध्यक्ष-राजस्थान अंचल*
4. *श्री दिनेश कुमार जी जैन, अध्यक्ष-मध्यांचल*
5. *श्री जवाहरलाल जी जैन, अध्यक्ष-उत्तरप्रदेश अंचल*
6. *श्री मिहिर जी गाँधी, अध्यक्ष-महाराष्ट्र अंचल*
7. *श्री विनोद जी बाकलीवाल, अध्यक्ष-कर्नाटक अंचल*
8. *श्री कन्हैयालाल जी सेठी, अध्यक्ष-पूर्वांचल*
9. *श्री प्रद्युम्न कुमार जी जैन, अध्यक्ष-दिल्ली अंचल*

मान्यवर!

सादर जयजिनेन्द्र।

सर्वप्रथम मैं आप सबको सर्वानुमति से अपने-अपने अंचल का अध्यक्ष निर्वाचित होने पर बधाई देता हूँ। सर्वानुमति से निर्वाचित होना बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह जैन समाज की एकता एवं तीर्थों के प्रति समाज की भावनाओं को प्रतिबिम्बित करता है। अब काम करने एवं समाज का नेतृत्व करने की आपकी बारी है। अंचल के समग्र विकास एवं दीर्घकालीन योजनाओं के निर्माण से पूर्व अंचल की समस्याओं की तथ्यपरक जानकारी होना बहुत जरूरी है एवं इन जानकारियों को तथ्यात्मक रूप से एकत्र करने का एकमात्र साधन है वैज्ञानिक दृष्टि से किया गया सर्वेक्षण। सर्वेक्षण के माध्यम से ही हम क्षेत्र की भूमि की सीमाओं, वैधानिक स्थिति, अतिक्रमणों, न्यायालयीन वादों, तात्कालिक एवं दीर्घकालिक समस्याओं, यात्रियों के आवागमन की स्थिति, आय के स्त्रोतों, वास्तविक आय आदि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। क्षेत्र के इतिहास, पुरातत्त्व, गत ५० वर्षों में हुए अतिशयों, नवीन निर्माणों, जीर्णोद्धार की जानकारी भी जरूरी है। किन्तु इन सब जानकारियों के लिए हमें सम्बन्धित क्षेत्र के पदाधिकारियों का विश्वास जीतना होगा। पक्ष-विपक्ष को छोड़कर, गोपनीयता का भरोसा दिलाकर ही हम सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते है इस हेतु आपका कार्यकाल सर्वाधिक उपयुक्त समय है।

मेरे विचार से भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की आगामी बैठक में इस पर एक पूरे सत्र में व्यापक रूप से चर्चा होनी चाहिए। तीर्थ सर्वेक्षण योजना के चेयरमेन श्री जैनेश जी झांझरी (इन्दौर) (94253 13196, 77489 69480) को इससे पूर्व अनुभवी व्यक्तियों के परामर्श से एक सर्वेक्षण पुस्तिका तैयार करानी होगी जिसमें समस्त विषय समाहित हो। पुस्तिका का सम्पूर्ण विषय प्रकाशन योग्य नहीं होगा। कुछ गोपनीय एवं कुछ सार्वजनिक करने योग्य, किन्तु उसमें आ सबकुछ जायेगा। पूर्व में किये गये

अपूर्ण सर्वेक्षणों के फार्म हमें आधार हेतु उपलब्ध हैं। सर्वेक्षणोपरान्त सर्वेक्षण पुस्तिका की 1 प्रति केन्द्रीय कार्यालय को एवं दूसरी आंचलिक कार्यालय में रखी जानी चाहिए। क्षेत्र का पंजीयन प्रमाण पत्र, मूलनायक के चित्र, विहंगम दृश्य आदि सभी के लिए भी स्थान उसी में होगा, यदि उपलब्ध न हो सकेंगे तो वे स्थान रिक्त रह जायेंगे। किन्तु जगह सबकी रहेगी। भूमि का पूर्ण विवरण रजिस्ट्री/पट्टा/नामांतरण/खसरा नं./नक्शा भी इसमें रहेगा। यदि कोई न्यायालयीन प्रकरण चल रहा है तो वाद संख्या भी आयेगी। सभी अंचलों के सम्मानित अध्यक्षों को वैतनिक/सेवाभावी 04 व्यक्तियों की एक टीम, वाहन(जीप / कार) की व्यवस्था सहित बनानी होगी जिसमें निम्नांकित सदस्य हो सकते हैं।

1. *जैन धर्म की सामान्य जानकारी रखने वाला/क्षेत्रीय भाषा का जानकार/हिन्दी लिखने में सक्षम।*
2. *फोटोग्राफर।*
3. *अंचल के तीर्थों एवं क्षेत्रीय भूगोल की जानकारी रखने वाला एक व्यक्ति/भूअभिलेखों की समझ रखने वाला व्यक्ति।*
4. *इतिहास एवं पुरातत्त्व का जानकार। शिलालेखोंकी समझ रखने वाला व्यक्ति।*

वैतनिक या सेवाभावी टीम बनाकर सम्पूर्ण अंचल का (प्रत्येक अंचल का समानान्तर रूप से) सर्वेक्षण करावे। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषा का जानकार होना जरूरी है। आवश्यकतानुसार जल्दी काम पूरा करने हेतु या सेवाभावी व्यक्ति लेने पर 1 से अधिक टीमें भी बनाई जा सकती है। कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व टीम के सदस्यों का प्रशिक्षण भी केन्द्रीय/आंचलिक स्तर पर जरूरी है। पूर्व में सर्वेक्षण कर चुके महानुभावों का भी सहयोग प्रशिक्षण में लेना चाहिए। श्री हसमुख जैन गाँधी (इन्दौर) द्वारा प्रकाशित दि. जैन तीर्थ निर्देशिका एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पूर्व में प्रकाशित भारत के दि. जैन तीर्थ के 5 भागों में से सम्बद्ध अंचल का भाग एवं कोटा, दिल्ली आदि स्थानों से प्रकाशित डाइरेक्ट्रीज भी उपयोगी एवं सहयोगी रहेगी।

मेरा आप सभी माननीय अध्यक्षों से अनुरोध है कि सर्वेक्षण के कार्य को प्राथमिकता से प्रारम्भ करें इससे अंचल के विकास की आवश्यकताओं को समझने मे तो मदद मिलेगी ही भारत के दि. जैन तीर्थ पुस्तक के संशोधित/परिवर्द्धित संस्करण को भी तैयार कर प्रकाशित किया जा सकेगा। वैसे भी भारत वर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी का १२५वां स्थापना दिवस आने वाला है। आशा है कि आप इस ऐतिहासिक कार्य को शीघ्र हस्तगत करेंगे।

सादर।

भवदीय
(डॉ. अनुपम जैन)
प्रधान सम्पादक

प्रतिलिपिः-श्री जैनेश झांझरी (77489 69480), चेयरमेन-तीर्थ सर्वेक्षण योजना उपसमिति को इस अनुरोध सहित कि माननीय अंचल अध्यक्षों से सम्पर्क कर शीघ्रता से क्रियान्वयन प्रारम्भ करें। यह कार्य श्रम, समय एवं व्यय साध्य है।

हमने यह पत्र पत्रिका में इसलिए प्रकाशित किया है जिससे तीर्थ सर्वेक्षण में सहभागी बनने के इच्छुक जन अपने अपने आंचलिक अध्यक्षों अथवा मुम्बई कार्यालय से सम्पर्क कर अपनी सहमति नोट करावें। पर्युषण पर्व की सफल समाप्ति पर मैं शुद्ध अन्तःकरण से आप सबसे विगत एक वर्ष में हुई भूलों/अपराधों हेतु क्षमा प्रार्थी हूँ।

सादर।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

आत्म आराधना की आध्यात्मिक प्रयोगशाला : पर्युषण

- ध्रुव कुमार जैन, प्रतापगढ़

आत्म जागरण ,आत्म चिन्तन एवं आत्मदर्शन का पावन पर्व पर्युषण, दश- धर्म रूपी रथ पर सवार होकर हम सब में संयम, साधना एवं आराधना का बीज अंकुरित करने, क्रोध-मान-माया-लोभ आदि विकारों से प्रदूषित आत्मा को स्वतंत्र करने और मानव में आत्म चेतना जागृत कर उन्हें मुक्ति-पथ की ओर अग्रसर करने 08 सितंबर 2024को पुन: मंगल आगमन कर चुका है।

पर्युषण जैन धर्म का महापर्व है। पूरे विश्व में इससे पवित्र अन्य कोई पर्व नहीं, जो मानव को उसके स्वरूप का दर्शन करा सके। अनन्त काल से आत्मा मिथ्यात्व मोह और अज्ञानता में रमता आ रहा है। वह अपने स्वभाव को भूलकर विभाव को ही निज स्वरूप मानता आ रहा है, जिसके कारण वह अपने दु:ख, क्लेश और पीड़ाओं का अन्त नहीं कर सका और न ही कर पायेगा, जब तक उसे अध्यात्म में रमने की कला नहीं आ जाती और अध्यात्म में रमने की कला को ही बताने प्रतिवर्ष पर्युषण का आगमन होता रहा है, जिसकी सम्पूर्ण शिक्षाएं आत्म-दर्शन पर ही केंद्रित होती है।

पर्युषण का दूसरा नाम दशलक्षण धर्म भी है। -उत्तम क्षमा, 2-उत्तम मार्दव, 3- उत्तम आर्जव, 4- उत्तम सत्य, 5- उत्तम शौच, 6- उत्तम संयम, 7-उत्तम तप, 8- उत्तम त्याग, 9- उत्तम आंकिचन्य, १0- उत्तम ब्रह्मचर्य ये दश धर्म नहीं बल्कि धर्म के दश-लक्षण है, जिन्हें संक्षेप में दश धर्म से अभिहित कर दिया गया है। जिस आत्मा में आत्म रुचि, आत्मज्ञान और आत्मलीनता का रूप प्रकट होता है, उसमें धर्म के ये दश-लक्षण स्वत: ही प्रकट हो जाते हैं।

वैसे तो प्रत्येक धार्मिक पर्वों का प्रयोजन आत्मा में वीतराग भाव की वृद्धि करना है,किन्तु इस पर्व का सम्बन्ध विशेष रुप से आत्मगुणों की आराधना से है।

पर्युषण मानव जगत में एक अद्भुत क्रान्ति पैदा करता है। इस पर्व का आगमन समस्त मानव जगत में आत्म कल्याण हेतु चिन्तन का भाव पैदा करना है, यह चिन्तन ही उसे सत्कर्म की ओर धकेलती है और उस ओर कदम बढ़ाना ही खुद के पथ को प्रकाशित करना है, जो इस पर्व के आगमन की एक सच्ची अनुभूति है।

आज का युग भौतिकवाद का युग है। आधुनिकता की होड़ में अग्रणी रहने के लिए यद्यपि वह जीवन रूपी निधि को कचरे के डिब्बे में फेंकता जा रहा है, त्याग से विमुख होकर भूखे भेड़िये की तरह भोग की ओर लपक रहा है, और इसी की छत्रछाया में दूसरे के घावों पर खड़ा होकर सुख ढूंढ रहा है, फिर भी पर्युषण की भनक पड़ते ही वह चाहे दस दिनों के लिए ही सही, आचरण की शुद्धता पर चिन्तन करना आरम्भ कर देता है। उसे मालुम है कि हिमालय की तरह अटल और अभेद्य पर्युषण के दस धर्म अपनी शिक्षाओं से हमें आकृष्ट अवश्य कर लेंगे।

पर्युषण हमारी आत्मा पर लगे प्रदूषण को दूर करने का एक उचित माध्यम है। हमारी आत्मा जो एकदम शुद्ध और मुक्ति-पथ के बिलकुल करीब है, उस पर तमाम बिकारी भावों ने अपना अधिकार बना रखा है और उसको एकदम मलिन कर रखा है। यद्यपि हमारी आत्मा की शुद्धता एवम उस पर लगे मलीनता का आवरण हटाने में पर्युषण के ये दस - धर्म ही उपयोगी हैं, फिर भी हम इस ओर ध्यान नहीं दे पा रहें हैं। यदि इस पर्व की महत्ता जानकर- समझकर इसे अपने जीवन में उतार पाते हैं तो सफल होगा इस पर्व का आना और सफल होगा इस मानव जीवन का सार, अन्यथा चौरासी लाख योनियों में फसें रहना तो हमारी आदत सी बन गई है।

आइये दस दिनों तक चलने वाले इस विशाल पर्युषण मेले में आत्म कल्याण का कुछ सामान खरीदें। इस मेले में खान-पान, आमोद-प्रमोद का सामान नहीं है, बल्कि यहाँ आत्मा-जगरण, आत्म-शोधन और आत्मिक- उजाले का सामान बिक रहा है। उत्तम क्षमादि दस धर्म की विशाल दुकानें सजी हुई है। ग्राहकों की इच्छा उन चमकती, जगमगाती और आकर्षक लगती दुकानों तक पहुंचने की है, वे वहाँ पहुँचना और कुछ न कुछ खरीदना भी चाहते है परन्तु मेले में घूम रहे ठगों-चोरों के कारण वहाँ तक पहुँचने से डर रहे हैं। ये चोर के कारण वहाँ तक पहुँचने से डर रहे हैं। ये चोर है- काम, क्रोध, मद, लोभ। पर्युषण मेले में जगह-जगह मजमा भी लगा हुआ है जहाँ कुछ व्रती- पुण्यात्मा अपने-अपने तरीकों से उन दुकानों तक पहुँचने का मार्ग बतला रहे है। जगह-जगह मेले में एनाउन्स भी हो रहा है कि यदि कोई ठग मेले में दिखाई दे तो उसे पर्युषण सुरक्षा चौकी में पहुँचाने का कष्ट करें, फिर क्यों हम पीछे हैं।

आइये हम सब मिलकर पर्वराज पर्युषण के पवित्र एवं मांगलिक, आगमन का स्वागत करें, उसकी शिक्षाओं को ग्रहण करें, दर्शन-पूजन-व्रत शुद्ध भावो से खुद का कल्याण करें, दश धर्मों का क्रम से पालन करें, मन में कलुषिता न रहने दें। यदि हम ऐसा कर गये तो पर्युषण का आना सुखद होगा। मानव जगत में अदभुतद क्रान्ति पैदा करने वाले इस शाश्वत पर्व के शुभागमन को यादगार बनाने के लिए हम अपने-अपने घरों में एक दीपक जलाये और छतों पर पंचरंगा ध्वज अवश्य फहरायें, जिससे हमारा पर्व विशालता को प्राप्त हो सके।

पर्युषण पर्व का ध्येय : विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

पर्युषण यानि दसलक्षण पर्व का जैनधर्म में बहुत ही महत्त्व है। यह पर्व हमारे जीवन के परिवर्तन में कारण बन सकता है। यह ऐसा पर्व है जो हमारी आत्मा की कालिमा को धोने का काम करता है। दिगम्बर एवं श्वेतांबर जैन दोनों संप्रदायों में यह पर्व भारी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। पर्युषण का अर्थ है – 'परि' यानी चारों ओर से, 'उषण' यानी धर्म की आराधना। वर्ष भर के सांसारिक क्रिया – कलापों के कारण उसमें जो दोष चिपक गया है , उसे दूर करने का प्रयास इस दौरान किया जाता है। शरीर के पोषण में तो हम पूरा वर्ष व्यतीत कर देते हैं। पर पर्व के इन दिनों में आत्म के पोषण के लिए व्रत, नियम, त्याग, संयम को अपनाया जाता है।

आत्मा के दश गुणों की आराधना : इस पर्व में आत्मा के दश गुणों की आराधना की जाती है। इनका सीधा सम्बंध आत्मा के कोमल परिणामों से है। इस पर्व का वैशिष्ट्य है कि इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर आत्मा के गुणों से है। इन गुणों में से एक गुण की भी परिपूर्णता हो जाय तो मोक्ष तत्त्व की उपलब्धि होने में किंचित् भी संदेह नहीं रह जाता है।

जैन धर्म में अहिंसा एवं आत्मा की शुद्धि को सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। प्रत्येक समय हमारे द्वारा किये गये अच्छे या बुरे कार्यों से कर्म बंध होता है, जिनका फल हमें अवश्य भोगना पड़ता है। शुभ कर्म जीवन व आत्मा को उच्च स्थान तक ले जाता है, वही अशुभ कर्मों से हमारी आत्मा मलिन होती जाती है।

दस दिन तक प्रत्येक दिन एक एक धर्म की आराधना : पर्युषण पर्व के दौरान विभिन्न धार्मिक क्रियाओं से आत्मशुद्धि की जाती व मोक्षमार्ग को प्रशस्त करने का प्रयास किया जाता है, ताकि जनम-मरण के चक्र से मुक्ति पायी जा सके। जब तक अशुभ कर्मों का बंधन नहीं छुटेगा, तब तक आत्मा के सच्चे स्वरूप को हम नहीं पा सकते हैं।

इस पर्व के दौरान दस धर्मों- उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन एवं उत्तम ब्रह्मचर्य को धारण किया जाता है। समाज के सभी पुरुष, महिलाएं एवं बच्चे पर्युषण पर्व को पूर्ण निष्ठा के साथ मनाते है।

यह पर्व जीवन में नया परिवर्तन लाता है। दश दिवसीय यह पावन पर्व पापों और कषायों को रग -रग से विसर्जन करने का संदेश देता है।

आत्म जागरण का संदेश : संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिसमें आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है। पर्युषण आत्म जागरण का संदेश देता है और हमारी सोई हुई आत्मा को जगाता है। यह आत्मा द्वारा आत्मा को पहचानने की शक्ति देता है।

यह पर्व जीवमात्र को क्रोध, मान,माया,लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, असंयम आदि विकारी भावों से मुक्त होने की प्रेरणा देता है। हमारे विकार या खोटे भाव ही हमारे दु:ख का कारण हैं और ये भाव वाह्य पदार्थों या व्यक्तियों के संसर्ग के निमित्त से उत्पन्न होते हैं। आसक्ति—रहित आत्मावलोकन करने वाला प्राणी ही इनसे बच पाता है। इस पर्व में इसी आत्म दर्शन की साधना की जाती है। यह एक ऐसा अभिनव पर्व है कि जिसमें अपने ही भीतर छिपे सद्गुणों को विकसित करने का पुरुषार्थ किया जाता है। अपने व्यक्तित्व को समुन्नत बनाने का यह पर्व एक सर्वोत्तम माध्यम है। इस दौरान व्यक्ति की संपूर्ण शक्तियां जग जाती हैं।

विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास : सांसारिक मोह-माया से दूर मंदिरों में भगवान की पूजा-आर्चना, अभिषेक, आरती, जाप एवं गुरूओं के समागम में अधिक से अधिक समय को व्यतीत किया जाता है एवं अपनी इंद्रियों को वश में कर विजय प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

दसलक्षण धर्म (पर्युषण पर्व) के फल के बारे में आचार्य कार्तिकेय स्वामी ने लिखा है-

एदे दहप्पयारा पाव कम्मस्स णासिया भणिया।
पुण्णस्स संजणाया पर पुण्णत्थं ण कायव्वा।।

यह धर्म के दशभेद पाप कर्म को नाश करने वाले और पुण्य का प्रार्दभाव करने वाले हैं। इसे इस रूप में भी कहा जा सकता है कि यह धर्म पुण्य के पालक और पाप के प्रक्षालक हैं।

इस पर्व में सभी अपने को अधिक से अधिक शुद्ध एवं पवित्र करने का प्रयास करते है। प्रेम, क्षमा और सच्ची मैत्री के व्यवहार का संकल्प लिया जाता है। खान-पान की शुद्धि एवं आचार-व्यवहार की शालीनता को जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाये रखने के लिये मन को मजबूत किया जाता है।

विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास करना ही इस पर्व का ध्येय है। पर्व पापों और कषायों को रग-रग से विसर्जन करने का संदेश देता है।

दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में मनाने की परंपरा : जैनधर्म के दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में इस पर्व को मनाने की परम्परा है। विशेष यह है कि श्वेताम्बर समाज भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी से भाद्रपद शुक्ला पंचमी तक सिर्फ 8 दिन का मनाते हैं। जबकि दिगम्बर समाज में 10 दिन का प्रचलन है। यह एक मात्र आत्मशुद्धि और आत्म जागरण का पर्व है।इस वर्ष यह महापर्व श्वेतांबर परंपरा में 01 सितंबर से 8 सितंबर तक व दिगम्बर जैन परंपरा में 8 सितम्बर से 17 सितम्बर 2024 तक विधि विधान, त्याग-तपस्या, साधना के साथ मनाया गया।

ज्ञान, ध्यान एवं संयम की आराधना का पर्व है: पर्यूषण

-प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन, हस्तिनापुर

दशलक्षण महापर्व वर्ष में तीन बार आता है लेकिन भादों के महीने में इस पर्व का विशेष महत्व है। इन दिनों में जैन श्रद्धालुगण दस दिनों में पूजन-पाठ, जप-तप, संयम, व्रत, उपवास करके आत्मा को परमात्मा बनाने का परम पुरुषार्थ करते हैं। इन दिनों मे कुछ व्यक्ति दसों दिन निर्जल उपवास रखकर आत्मा की साधना करते हैं एवं यथा शक्ति हर व्यक्ति बालक से लेकर वृद्ध तक इन दस दिनों में धार्मिक क्रियाओं में संलग्न रहता है। जिस प्रकार से हर वस्तु का एक सीजन आता है, वैसे ही भादों के महीने में सबसे ज्यादा व्रत एवं उपवास किया जाता है। इसे पुण्य संचय का सीजन कह सकते हैं। आचार्यों ने धर्म को दस रूपों में विभक्त किया है। जो कि उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य हैं। क्षमा से प्रारंभ होने वाला धर्म अंत में क्षमावाणी महापर्व मनाकर सम्पन्न किया जाता है। जिससे कि वर्ष भर में परस्पर में हुए त्रुटि एवं वैरभाव को क्षमा मांगकर के एक-दूसरे के प्रति वात्सल्य का भाव रखते हैं। जो कि निम्न प्रकार से पूर्वाचार्यों ने बताये हैं-

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं। सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।।
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं। चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं।।

इन पंक्तियों का अर्थ उत्तम-क्षमा-मादर्व-आर्जव यह भाव हैं सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग ये उपाय हैं और सार रूप उत्तम आकिंचन्य व उत्तम ब्रह्मचर्य यह इन धर्मों का साररूप है। व्यक्ति जीवन में यदि इन दस धर्मों के पथ पर चलता हुआ अपने जीवन को व्यतीत करे तो समाज को व स्वयं को उन्नति के पथ पर ले जा सकता है। आईये हम दस धर्मों को जानें-

उत्तम क्षमा धर्म

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस, पर भव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो।।

क्षमा-वीरस्य-भूषणम् अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है। कायर व्यक्ति क्षमा नहीं कर सकता है। क्षमा धर्म जीवन का श्रृंगार है। यदि व्यक्ति क्षमाशील नहीं है तो वह अप्रियता को सदैव प्राप्त होता है। उस व्यक्ति को समाज में कोई भी पसंद नहीं करता है एवं पास में नहीं बैठाता है सदैव उसका तिरस्कार किया जाता है। इसलिए आचार्यों ने क्षमा को सर्व श्रेष्ठ धर्म बताया है। सबसे क्षमाशील होने की धरती को उपमा दी गई है। क्योंकि धरती को मॉ की संज्ञा दी है। मॉ सदैव क्षमा से भरी होती है। पुत्र कितनी भी, कैसी भी दुष्टता करता है लेकिन मॉ सदैव क्षमा करती है। जैन दर्शन में क्षमा धर्म को ग्रहण करके अनेक मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया है। जैसे भगवान बाहुबली स्वामी, पाण्डव कुमार महामुनि, गजकुमार मुनि एवं गांधी जी जैसे महात्मा ने भी अपने प्राण लेने वाले को भी क्षमा प्रदान की।

सब कुछ अपराध सहन करके, भावों को पूर्ण क्षमा करिये।
यह उत्तम क्षमा जगन्माता, इसकी नितप्रति अर्चा करिये।।

उत्तम मार्दव धर्म

उत्तम मार्दव-गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
वस्यो निगोद माहितैं आया, दमरी रूकन भाग बिकाया।।

मान-कषाय महाविष है दुर्गति का यह कारण है। जीवन में जिस व्यक्ति ने मान-कषाय मन में धारण किया उसका सदैव नाश हुआ है। रावण महामानी व्यक्ति था। आज उसके फलस्वरूप कोई भी पुत्र-पुत्री का नाम उसके नाम पर रखना नहीं चाहता है। आचार्यों ने मान को आठ प्रकार का बताया है जो निम्न प्रकार हैं-जाति, कुल, बल, ऐश्वर्य, रूप, तप, विद्या और धन यह समय के साथ नष्ट हो जाते हैं। इसलिये कभी भी मान नहीं करना चाहिए। जिनके वशीभूत होकर प्राणी दुर्गति में चला जाता है एवं तिर्यंच पर्याय को प्राप्त करता है। इस धर्म से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जीवन में सदैव छोटे बनकर रहने में व्यक्ति उच्च स्थान को एवं समाज में प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। सदैव समाज में ऐसे व्यक्ति का लोग अनुशरण करते हैं।

मृदुता का भाव कहा मार्दव, यह मान शत्रु मर्दनकारी।
यह दर्शन ज्ञान चरित्र तथा, उपचार विनय से सुखकारी।।

उत्तम आर्जव धर्म

उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुःखदानी।
मनमें होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करिये।।

मन में सरलता का भाव आर्जव धर्म को प्रगट करता है। मायाचारी से भरा हुआ व्यक्ति दीर्घ कालीन प्रसिद्धि को नहीं प्राप्त कर सकता है। मायाचारी करने वाला व्यक्ति सदैव नरक एवं तिर्यंचगति का द्वार अपने लिए खोलता है। मन-वचन-काय की एक रूपता ही उत्तम आर्जव धर्म है। सरल व्यक्ति से हर कोई जुड़ना चाहता है एवं मायाचारी से दूर रहना चाहता है। उत्तम गति को प्राप्त करने के लिए सरलता अत्यंत आवश्यक है, यह मोक्ष का द्वार खोलती है। खुद ठग जाना अच्छा है। दूसरे को ठगने की अपेक्षा।

ऋजु भाव कहा आर्जव उत्तम, मन वच ओ काय सरल रखना।
इन कुटिल किये माया होती, तिर्यंचगति के दुःख भरना।।

उत्तम सत्य धर्म

उत्तम सत्य-वरत पा लीजे, पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
साँचे झूठे मानुष देखा, आपन पूत स्वपास न पेखो।।

उत्तम सत्य वचन बोलने वाले व्यक्ति को वाक्य सिद्धि हो जाती है। सत्य बोलने वाला व्यक्ति सदैव ही निर्भय एवं सुखमय जीवन व्यतीत करता है। एक झूठ व्यक्ति को अनेक झूठ बोलने पर विवश कर देता है। आचार्यों ने सत्य को परमधर्म माना है। सत्यवादी हरिशचंद की कथा जग विख्यात है। आज भारतीय मुद्रा के ऊपर सत्य-मेव-जयते अंकित रहता है। जबकि उस मुद्रा को प्राप्त करने के लिए लोगों को अनेक प्रकार के झूठ बोलने पड़ते हैं। लेकिन फिर भी अंत में सत्य की ही विजय होती है। संसार समुद्र से तिरने के लिए सत्य धर्म अत्यंत आवश्यक है।

सत् सम्यक् और प्रशस्त वचन, कहता है सत्यधर्म सुन्दर।
अस्ति को अस्ति रूप कहना, मिथ्या अपलाप रहित सुखकार।।

उत्तम शौच धर्म

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना।
आशा-पास महा दुःखदानी, सुख पावैं सन्तोषी प्रानी।।

उत्तम शौच धर्म सुचिता के भाव को प्रगट करता है। शौच अर्थात् आत्म शुद्धि। जब तक आत्मा में शुद्धि के परिणाम नहीं होगे अर्थात् परिणामों में विशुद्धि नहीं होगी तब तक किसी भी प्रकार का धर्म प्रगट नहीं हो सकता है। शौच धर्म लोभ-

कषाय के अभाव में प्रगट होता है। आचार्यों ने लोभ को पाप का बाप कहा है। क्योंकि प्राणी लोभ के वशीभूत होकर के ही पापों को करता चला जाता है एवं अपने आपको दुर्गति का पात्र बना लेता है। आशाओं से परिपूर्ण व्यक्ति सदैव ही लोभवृत्ति को प्राप्त होता है। संतोषी प्राणी सदैव पुण्य का बंध करता है एवं पापों से दूर रहता है। यही उत्तम शौच धर्म है।

शुचि का जो भाव शौच वो ही, मन से सब लोभ दूर करना।
निर्लोभ भावना से नित ही, सब जग को स्वप्न सदृश गिनना।।

उत्तम संयम धर्म

उत्तम संयम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन-करन सुख ठाहीं।।

संयमी व्यक्ति सदा ही सुखी रहता है। संयम रत्न दुर्लभता से प्राप्त होता है। संयम को रत्न की संज्ञा आचार्यों ने दी है। मनुष्य भव पा करके व्यक्ति को सदैव संसार भोगों में रत न रहते हुए संयम की साधना करते हुए अपने गृहस्थ जीवन को पालना चाहिए। संयम बिना जीवन एक पशु के समान है। हर व्यक्ति को जिसने इस संसार में मनुष्य जीवन प्राप्त किया है। उसको सदैव संयम को अपने जीवन में स्थान देना चाहिए। पांच स्थावर और त्रस ऐसे षटकाय जीवों की रक्षा करना प्राणी संयम है। पांचों इंद्रियों तथा मन को वश में करना इंद्रिय संयम है। संयमी व्यक्ति अपने जीवन में अपना एवं दूसरों का सदैव कल्याण करता है।

व्रत धारण समिति का पालन, क्रोधादि कषय विनिग्रह है।
मन वचन तन की चेष्टा त्यागे, इन्द्रिय जप संयम पॉच कहे।।

उत्तम तप धर्म

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैलको वज्र समाना।
वस्यो अनादि-निगोद-मँझारा, भू-विकलत्रय-पशु-तन धारा।।

मनुष्य भव पाकर के तप अवश्य करना चाहिए। तप मनुष्य जीवन का श्रृंगार है। ऐसे तपरूपी धर्म की सदैव ही जय होती है। तपस्वी व्यक्ति सदैव ही उत्तम गति का प्राप्त होता है। तप वह है जहॉ परिग्रह का त्याग किया जाता है। तप वह है जहॉ काम को नष्ट कर दिया जाता है। तप वह है जहाँ नग्न मुद्रा दिखाई देती है और तप वह है जहाँ पर्वतों की कंदराओं में निवास किया जाता है। अनेक परिषहों को सहन करके तपस्या की जाती है। तप के बाह्य और अभ्यंतर से बारह भेद आचार्यों ने बतलाये हैं। अनशन, अवमौदर्य, व्रतपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शय्यानासन, कायक्लेश ये छः प्रकार के तप बाह्य हैं। अंतरंग तप के छः भेद हैं-प्राश्यचित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग एवं ध्यान।

उत्तम तप द्वादश विध माना, बाह्याभ्यंतर के भेदों से।
अनशन ऊनोदर वृत्तपरीसंख्या, रस त्याग प्रभेदों से।।

उत्तम त्याग धर्म

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा।
निहचौ राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै।।

त्याग से सुख की प्राप्ति होती है। त्यागी व्यक्ति सदैव ही चिंता मुक्त रहता है। उसे किसी भी प्रकार की चिंता मन में नहीं रहती है। त्याग धर्म का अंग है। तप गुण से युक्त अत्यंत पवित्र पात्र के लिए अपनी शक्ति के अनुसार भक्तिपूर्वक त्याग देना चाहिए। क्योंकि वह पात्र अन्य गति के लिए पाथेय के समान है। ऐसा समझो। दान चार प्रकार शास्त्रों में बतलाया है। अभय दान, शास्त्र दान, औषधि दान एवं आहार दान। सभी दान श्रेष्ठ हैं लेकिन उत्तम पात्र को दिया हुआ आहार दान श्रेष्ठ है चूंकि वह श्रेष्ठ गति का बंध कराता है। नग्न दिगम्बर साधु को उत्तम पात्र की संज्ञा दी है, जो सदैव ज्ञान ध्यान और साधना में रत रहते हैं। उनको दिया हुआ आहार दान श्रेष्ठ गति का बंध कराता है। हर व्यक्ति को सदैव यथा शक्ति दान करना चाहिए।

उत्तम त्याग कहा जग में, जो त्यागे विषय कषायों को।
शुभ दान चार विध के देवें, उत्तम आदि त्रय पात्रों को।।

उत्तम आकिंचन्य धर्म

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिंता दुःख ही मानो।
फाँस तनकसी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुःख भालै।।

आकिंचन्य का अर्थ है किसी भी प्रकार के परिग्रह हो नहीं रखना। नग्न दिगम्बर साधु को आकिंचन्य कहा जाता है। उत्तम आकिंचन्य धर्म हमें सिखाता है न मैं किसी का न कोई मेरा धर्म आकिंचन्य नाम इसी का। आकिंचन्य धर्म की भावना करो कि आत्मा शरीर से भिन्न है, ज्ञानमयी है, उपमा रहित है, वर्ण रहित है, सुख सम्पन्न है, परम उत्कृष्ट है, अतीन्द्रिय है और भय रहित है। सर्व परिग्रह से निर्वृत होना आकिंचन्य धर्म है। शुभ ध्यान करने की शक्ति होना आकिंचन्य वृत है। जहाँ तृण मात्र भी परिग्रह नहीं होता वह नियम से आकिंचन्य व्रत है। इस आकिंचन्य धर्म के प्रभाव से अपने स्वभाव को प्राप्त करके तीर्थंकरों ने शिवनगर को प्राप्त कर लिया है।

नहिं किंचित् भी तेरा जग में, यह ही आकिंचन भाव कहा।
बस एक अकेला आत्मा ही, यह गुण अनंत का पुंज अहा।।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहै बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे।।

आत्मा ही ब्रह्म है उस ब्रह्मस्वरूप आत्मा में चर्या करना ब्रह्मचर्य है अथवा गुरु के संघ में रहना भी ब्रह्मचर्य है। जिस प्रकार से १ अंक को रखे बिना असंख्य बिन्दु भी रखते जाईये किन्तु कुछ भी संख्या नहीं बनती है। ठीक उसी प्रकार से बिना ब्रह्मचर्य के कोई भी व्रत, तप का फल प्राप्त नहीं होता है। दुर्धर और उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करना चाहिए और विषयों की आशा का त्याग कर देना चाहिए। यह प्राणी स्त्री सुख में रत होकर मनरूपी हाथी से मदोन्मत्त हो रहा है, इसलिये हे भव्यों! स्थिर होकर उस ब्रह्मचर्य व्रत की रक्षा करो। सीता के शील के महात्म से अग्नि भी जल का सरोवर बन गई। सुदर्शन सेठ को सूली भी शील व्रत के प्रभाव से सिंहासन बन गई।

यह ब्रह्मस्वरूप कही आत्मा, इसमें चर्या ब्रह्मचर्य कहा।
गुरूकुल में वास रहे नित ही, वह भी है ब्रह्मचर्य दुखहा।।

दशधर्म सार - क्षमा जिसकी जड़ है, मृदुता स्कंध हैं, आर्जव शाखायें है, उसको सिंचित करने वाला शौचधर्म जल है, सत्यधर्म पत्ते हैं, संयम, तप और त्याग रूप पुष्प खिल रहे हैं, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य धर्मरूप सुन्दर मंजरियॉ निकल आई हैं। ऐसा यह धर्मरूप कल्पवृक्ष स्वर्ग और मोक्षरूप फल को देता है। हे धर्मकल्पतरों! मैं तुम्हारी पुनः पुनः उपासना करके तुमसे ज्ञानवती लक्ष्मी से युक्त मुक्तिरूप एक सर्वोत्कृष्ट फल की ही याचना करता हूं।

अंत में आपस में एक-दूसरे से वर्ष भर में हुई गल्तियों के लिए मन-वचन-काय से क्षमा प्रार्थना करके अंतर मन के कालुष एवं वैर भावों का त्याग करें। यही दशलक्षण पर्व का सार है।

आचार्य समन्तभद्र

- ब्र. डॉ. सविता जैन, अधिष्ठात्री शीतल तीर्थ - रतलाम

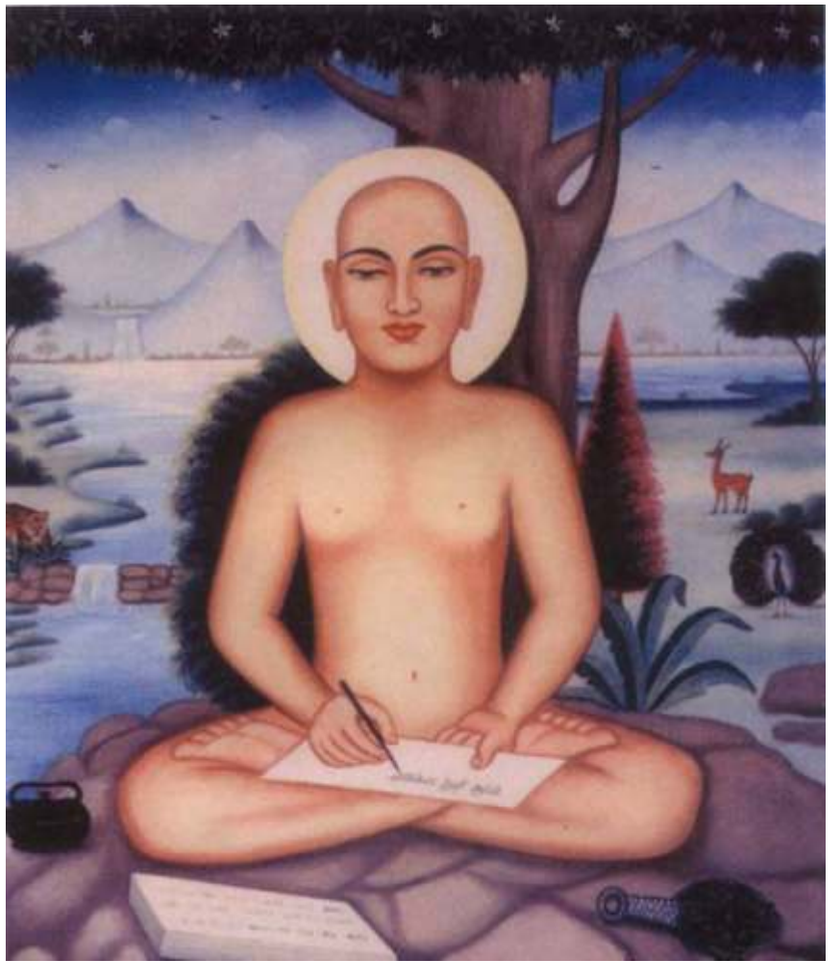

भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात ५७२ वर्षों तक जैनाचार्यों में श्रुत कि श्रोत्र परम्परा रहीं है अर्थात एक दूसरे से कहे जाने पर याद रखकर कहने कि परम्परा रहीं सर्वप्रथम लिखित रूप में आचार्य धरसेन ने अपने शिष्य पुष्पदन्त और भूतबलि के माध्यम से जैन साहित्य लिपिबद्ध किया। उसी परम्परा में आचार्य उमास्वामी संस्कृत के प्रमुख सूत्रकर्ता रहें है।

आचार्य समन्तभद्र कवि होने के साथ-साथ प्रकाण्ड दार्शनिक और गम्भीर चिन्तक भी थे। ये स्तोत्र कवि होने के साथ ऐसे तर्ककुशल मनीषी है जिनकी दार्शनिक रचनाओं पर आचार्य अंकलंक और आचार्य विद्यानन्द जैसे विद्वानों ने टीका और विवृत्तियाँ लिखकर मौलिक ग्रंथ रचयिता का यश प्राप्त किया है। वीतरागी तीर्थंकर की स्तुतियों में दार्शनिक मान्यताओं का समावेश करना आपकी असाधारण प्रतिभा का द्योतक है। आचार्य समन्तभद्र जैन दार्शनिकों में आचार्य कुन्दकुन्द के बाद दिगम्बर परम्परा में अग्रणी, प्रभावशाली और तार्किक आचार्य हुए हैं। ये 'समन्तभद्र' थे, अर्थात बाहर भीतर सब और से भद्र रूप थे। समन्तभद्र बहुत बड़े योगी, त्यागी, तपस्वी एवं तत्त्वज्ञानी महापुरूष थे। वे जैन धर्म एवं सिद्धांतों के मर्मज्ञ होने के साथ ही तर्क, व्याकरण, छन्द, अलंकार और काव्यकोषादि ग्रन्थों में पूरी तरह निष्णात थे।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार स्वर्गीय पंडित जुगलकिशोर 'मुख्तार' ने अपने विस्तृत लेखों में अनेक प्रमाण देकर यह स्पष्ट किया है कि स्वामी समन्तभद्र 'तत्त्वार्थ सूत्र' के कर्ता आचार्य उमास्वामी के पश्चात् एवं पूज्यपाद स्वामी के पूर्व हुए हैं। अतः ये असन्दिग्ध रूप से विक्रम की दूसरी-तीसरी शताब्दी के महान् विद्वान थे।

श्रवणबेलगोला के विद्वान दौर्बलिजिनदास शास्त्री के शास्त्र भंडार में सुरक्षित 'आप्तमीमांसा' की एक प्राचीन ताड़पत्रीय प्रति के निम्नांकित पुष्पिकावाक्य से स्पष्ट है कि समन्तभद्र फणिमंड्लान्तर्गत उरगपुर के राजा के पुत्र थे-

'इति श्री
फणिमंडलालंकार
स्योरगपुराधिपसूनोः
श्रीस्वामी समन्तभ्रद्रमुनेः
कृतौ आप्तमीमांसायाम्'

श्रवणबलगोल के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि भ्रदबाहु श्रुतकेवली के शिष्य चन्द्रगुप्त मुनि के वंशज पद्मनन्दि अपरनाम कुन्दकुन्द मुनिराज, उनके वंशज गृद्धपिच्छाचार्य और गृद्धपिच्छ के शिष्य बलाकपिच्छाचार्य और उनके वंशज समन्तभद्र हुए। अभिलेख में बताया है-

''श्रीगृद्धपिच्छ-मुनिपस्य बलाकपिच्छः
शिश्योऽजनिऽष्टभुवनत्रयवर्त्तकीर्ति
चारित्रचन्चुरखिलावनिपाल-मौलि-
माला-शिलोमुख-विराजितपादपद्मः।।
एवं महाचार्यपरम्परायां स्यात्कारमुद्राङ्कितततत्त्वदोपः ।
भद्रस्समन्ताद्गुणतो गणीशस्समन्तभद्रोऽजनि वादिसिंहः।।''[४]

इस प्रशस्तिवाक्य से स्पष्ट है कि समन्तभद्र स्वामी का जन्म क्षत्रियवंश में हुआ था उनका जन्म स्थान उरगपुर है। स्वामी समन्तभद्र जी की असाधारण विद्वता, तार्किकता दार्शनिकता और पाण्डित्य से भरी हुई रचनाओं के परिणाम स्वरूप उनके परवर्ती आचार्यों ने अपने ग्रंथों में उनका यशोगान किया है। यथा

आदिपुराण में आचार्य जिनसेन ने इन्हें वादित्य, वाग्मित्व,

कवित्व और गमकत्व इन चार विशेषणों से युक्त बताया है। इतना ही नहीं, जिनसेन ने इनको कवि-वेधा कहकर कवियों को उत्पन्न करने वाला विधाता भी लिखा है-

कवीनां गमकानाञ्च वादिनां वाग्मिनामपि।
यशः सामन्तभद्रोयं मुर्ध्नि चूडामणीयते।।
नमः समन्तभद्राय महते कविवेधसे।
यद्वचोवज्रपातेन निभिन्नाः कुमताद्रयः।।[२]

मैं कवि समन्तभद्र को नमस्कार करता हूँ, जो कवियों में ब्रह्मा हैं, और जिनके वचनरूप वज्रपात से मिथ्यातमरूपी पर्वत चूर-चूर हो जाते हैं।

स्वतन्त्र कविता करने वाले कवि, शिष्यों का मर्म तक पहुँचाने वाले गमक, शास्त्रार्थ करने वाले वादी और मनोहर व्याख्यान देने वाले वाग्मियों के मस्तक पर समन्तभद्रस्वामी का यश चूड़ामणि के समान आचरण करने वाला है। वादीभ-सिंह ने अपने 'गद्यचिन्तामणि' ग्रन्थ में समन्तभद्रस्वामी की तार्किक प्रतिभा एवं शास्त्रार्थ करने की क्षमता की सुन्दर व्यंजना की है। समन्तभद्र के समक्ष बड़े-बड़े प्रतिपक्षी सिद्धान्तों का महत्त्व समाप्त हो जाता था और प्रतिवादी मौन होकर उनके समक्ष स्तब्ध रह जाते थे।

सरस्वतीस्वैरविहारभूमयः समन्तभद्रप्रमुखा मुनीश्वराः।
जयन्ति वाग्वज्रनिपातपाटितप्रतीपराद्धान्तमहीध्रकोटयः।।[३]

श्रीसमन्तभद्र मुनीश्वर सरस्वती की स्वच्छन्द विहारभूमि थे। उनके वचनरूपी वज्र के निपात से प्रतिपक्षी सिद्धान्तरूपी पर्वतों की चोटियाँ चूर-चूर हो गयी थीं। उन्होंने जिनशासन की गौरवमयी पताका को नीले आकाश में फहराने का कार्य किया था। परवादी-पंचानन बर्द्धमानसूरिने समन्तभद्र को 'महाकवीश्वर' और 'सुतर्कशास्त्रामृतसागर' कहकर उनसे कवित्वशक्ति प्राप्त करने की प्रार्थना की है-

ज्ञानार्णव के रचयिता शुभचन्द्राचार्य ने समन्तभद्र को 'कवीन्द्र-भास्वान्' विशेषण के साथ स्मरण करते हुये उन्हें श्रेष्ठ कवीश्वर कहा है-

समन्तभद्रादिकवीन्द्रभास्वतां स्फुरन्ति यत्रामलसूक्तिरश्मयः।
व्रजन्ति खद्योतवदेव हास्यतां न तत्र किं ज्ञानलवोद्धता जनाः।।[४]

महाकवि वीरनंदी आचार्य ने अपने चन्द्रप्रभ-चरित में, श्री नरेन्द्रसेनाचार्य ने 'सिद्धान्त-सार-संग्रह में, अपभ्रंश के यशस्वी मनीषी भट्टारक यशकीर्ति (लगभग १२ वीं सदी) में अपने 'चंदप्पह-चरिउ' में, संवत् १७२७ में कवि दामोदर ने अपने चन्द्रप्रभ-चरित्र में, सं. १६५७ में भ. विद्याभूषण के शिष्य श्रीभूषण ने 'पाण्डवपुराण' में, आठवीं सदी के धुरन्धर विद्वान आचार्य अकलंक देव ने अपनी अष्टशती में, देवागमवृत्ति (भाष्य) का प्रणयन करते हुए भट्टाकलंकदेव ने समंतभद्र को उनकी विशेषताओं सहित प्रणाम किया है, आचार्य अजितसेन ने अपनी 'अलंकार चिन्तामणि' में तथा कवि हस्तिमल्ल के नाटक 'विक्रान्तकौरव' की प्रशस्ति में, श्वेताम्बर विद्वान श्री हरिभद्र सूरि जो भट्टाकलंक देव जैसे उद्भट और मूर्धन्य मनीषी थे उन्होने अपनी 'अनेकान्तजय पताका' तथा उसकी स्वोपज्ञ टीका में, ब्रह्म अजित ने 'हनुमच्चरित्र' में, 'आदिपुराण' के कर्त्ता भगवज्जिनसेनाचार्य प्रथम ने स्वामी समन्तभद्र को महाकवि ब्रह्मा के रूप में पुण्य स्मरण किया है। श्री वर्धमान सूरि ने अपने 'वरांग चरित्र' में, ग्यारहवीं सदी के महाकवि वादिराज सूरि ने अपने 'यशोधर चरित' तथा 'पार्श्वनाथ चरित' में, आचार्य शिवकोटि ने अपनी 'रत्नमाला' में आदि ऐसे अनेक आचार्यों ने अपने-अपने ग्रंथों में आचार्य समन्तभद्रस्वामी की प्रतिभा एवं गुणों का यशोगान किया है।

आचार्य वसुनन्दि ने देवागम की संस्कृत टीका में स्वामी समन्तभद्र को 'त्रिभुवनलब्धजयपताक' 'प्रमाणनयचक्षु' और 'स्याद्वाद शरीर', तार्किक चूडामणि' - जैसे विशेषणों से अलंकृत किया है।

दक्षिण के एक कवि नागराज (१२५३ शक.सं.) स्वामी समन्तभद्र की भारती से इतना अधिक प्रभावित हुए थे कि उन्होंने आठ श्लोकों का एक सशक्त स्तोत्र 'समन्तभद्र भारती स्तोत्र' शीर्षक से संस्कृत में रचा था

स्वामी समन्तभद्र का स्तुतिगान साहित्यकारों, कवियों, आचार्यों या मुनियों तक ही सीमित नहीं रहा अपितु उनके अन्य प्रशंसक उनकी यशोगाथाएं शिलालेखों में भी उत्कीर्ण करा गये हैं।

मुनिदीक्षा ग्रहण करने के पश्चात जब आप मणुवकहल्लो स्थान में विचरण कर रहे थे और अनेक दुर्द्धर तपश्चरण द्वारा आत्मोन्नति के पथ पर अग्रणीय थे उस समय असाता वेदनीय के उदय से आपको भस्मक व्याधि नामक रोग हो गया जिससे दिगम्बर मुनि चर्या का पालन अशक्य प्रतीत हुआ अतएव आप ने गुरू से सल्लेखना धारण करने कि अनुमति चाही। गुरू ने सब परिस्थितियों को जानकर कहा कि आप के सल्लेखना समय नहीं आया है आप को अभी जिनशासन की सेवा हेतु अनेक कार्य करने है अतः आप मुनि दीक्षा छोड़ कर रोग शमन का उपाय करें। रोग शमन होने पर पुनः मुनि दीक्षा ग्रहण करें। गुरू के इस आदेशानुसार समन्तभद्र रोगोपचार के हेतु नाग्न्यपद को छोड़कर सन्यासी बन गये और इधर - उधर विचरण करने लगे। पश्चात् वाराणसी में शिवकोटि राजा के भीमलिंग नामक शिवालय में जाकर राजा को। आशीर्वाद दिया और शिवजी को अर्पण किये जाने वाले नैवेद्य को शिवजी को ही खिला दिने कि घोषणा की। राजा इससे प्रसन्न हुआ और उन्हें शिवजी को नैवेद्य भक्षण कराने की अनुमति दे दी। समन्तभद्र अनुमति

प्राप्त कर शिवालय के किवाड़ बन्द कर उस नैवेद्य को स्वयं ही भक्षण कर रोग को शांत करने लगे। शिव भोग से उनकी व्याधि धीरे-धीरे ठीक होने लगी और बचने लगा अन्त में राजा को गुप्तचरों से पता चला कि ये शिव भक्त नहीं है। इससे राजा बहोत क्रोधित हुआ और उन्हे वास्तविकता बताने के लिए कहा। तब समन्तभद्र ने निम्न श्लोक में अपना परिचय दिया।

(कांच्यां नग्नाटकोऽहं मलमलिनतनुर्लाबुशे पाण्डुपिण्ड
पुण्ड्रोण्डे षाक्य भिक्षुः दशपुरनगरे भिष्टभोजी परिव्राट।
वाराणस्यामभूवं भुवं षशधरधवलः पाण्डुरांगस्तपस्वी
राजन् यस्याअस्ति षक्तिस वदतु-पुरतो जैननिर्ग्रन्थवादी।।)[५]

कांची में मलिन वेषधारी दिगम्बर रहा, लाम्बुस नगर में भस्म रमाकर शरीर को श्वेत किया, पुण्डोण्ड में जाकर बौद्ध भिक्षु बना, दशपुर नगर में मिष्ट भोजन करने वाला सन्यासी बना, वाराणसी मे श्वेत वस्त्रधारी तपस्वी बना। राजन् आपके सामने दिगम्बर जैनवादी खड़ा है, जिसकी शक्ति हो मुझ से शास्त्रार्थ कर ले। दक्षिण के होते हुए भी उन्होने देश मे भ्रमण किया, द्वितीय पद्य में आया है

पूर्व पाटलिपुत्र-मध्य नगरे मेरी मया ताडिता
पश्चान्मालव-सिन्धु-ठक्क-विषये कान्चीपुरे वैदिशे।
प्राप्तऽहं करहाटकं बहुभटं विद्योत्कटं संकटम्
वादार्थी विचराम्यहन्नरपते शार्दूलविक्रीडितम्।।[७]

मैंने पहले पाटलिपुत्र नगर में वाद की भेरी बजाई। पुनः मालवा, सिन्धु देश, ढक्क-ढाका (बंगाल), कान्चीपुर और विदिशा-भेलसा के आसपास के प्रदेशों में भेरी बजाई। अब बड़े-बड़े विद्वानों से युक्त इस करहाटक देश में गया। इस प्रकार हे राजन्! मैं वाद करने के लिए सिंह के समान इतस्ततः क्रीड़ा करता फिरता हूँ।

राजा ने शिव मूर्ति को नमस्कार करने का आग्रह किया। समन्तभद्र कवि थे। उन्होने चौबीस तीर्थंकरो का स्तवन शुरू किया। जब वे आठवें तीर्थंकर चन्दप्रभु का स्तवन कर रहे थे, तब चन्द्रप्रभु भगवान की मूर्ति प्रकट हो गई। स्तवन पूर्ण हुआ। यह स्तवन स्वयंभूस्तोत्र के नाम से प्रसिद्ध है। यह कथा ब्रह्म नमिदत्त कथा कोष के आधार पर है।

आचार्य समन्तभद्र ने बड़ी निर्भीकता के साथ वाराणासी के राजा शिवकोटी को कहा कि -

(आचार्यो अहं कविरहमहं वादिराट पण्डितोऽहं
दैवज्ञोऽहं भिशगहमहं मान्त्रिकस्तान्त्रिककोऽहम।
राजन्नस्यां जलधिवलया में खलायामिलाया
माज्ञासिद्धः किमिति बहुना सिद्धसारस्वतोऽहम्।।)[७]

मैं आचार्य हूँ, कवि हूँ, शास्त्रार्थियों में श्रेष्ठ हूँ, पण्डित हूँ, ज्योतिष हूँ, वैद्य हूँ, मान्त्रिक हूँ, तान्त्रिक हूँ, हे राजन् इस सम्पूर्ण पृथ्वी मे मैं अज्ञासिद्ध हूँ। अधिक क्या कहूँ, सिद्ध सारस्वत हूँ,

स्वामी समन्तभद्र की रचनाएँ हैं।

(१.) स्तुति विद्या (जिनशतक) (१.) युक्त्यनुशासन (२.) स्वयंभूस्तोत्र (३.) देवागम (आप्तमीमांसा) स्तोत्र (४.) रत्नकरण्ड श्रावकाचार (५.) जीवसिद्धि (६.) तत्वानुशासन (७.) प्राकृत व्याकरण (८.) प्रमाणपदार्थ (९.) कर्मप्राभृत टीका (१०) गन्धहस्ति महाभाष्य

१.) स्तुतिविद्या :- स्तुतिविद्या को जिनशतक और जिनशतकालंकार के नाम से भी जाना जाता है इसमें सौ काव्यों में चित्र काव्य और बन्द रचना का अपूर्व कौशल समाहित है।

२.) युक्त्यानुशासन :- युक्त्यानुशासन' एक काव्य रचना है जिसमें समस्त जिनशासन का ६४ पन्नों में समाविष्ट किया गया है। जैन तीर्थंकरों की स्तुति की गयी है।

३.) स्वयंभूस्तोत्र :- २४ तीर्थंकरों की स्तुति की गई है।

४.) देवागम (आप्तमीमांसा) स्तोत्र :- तत्वार्थ सूत्र के मंगलाचरण पर इस ग्रंथ की रचना की गई है इसमें ११४ श्लोकों में जैन धर्म के अनुसार केवल ज्ञान समझाया गया हैं इसमें केवली के गुणों का वर्णन हैं।

५.) रतनकरण्ड श्रावकाचार :- रत्नकरण्ड श्रावकाचार श्रावक के आचरण पर हैं इसमें १४० श्लोक हैं।

जीवसिद्धि, तत्वानुशासन, प्राकृत व्याकरण, प्रमाणपदार्थ, कर्मप्राभृत टीका और गन्धहस्ति महाभाष्य (तत्त्वार्थ सूत्र पर व्याख्या) ये रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। अतः इनके सम्बन्ध में विवेचन करना सम्भव नहीं। इन रचनाओं के केवल नाम निर्देश ही जहाँ-तहाँ मिलते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

(१). जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, अभिलेख संख्या ४०, पृष्ठ २५
(२). महापुराण, भाग १ / ४३-४४।
(३). गद्यचिन्तामणि.। वादिभ सिहं
(४). ज्ञानार्णव १ / १४, शुभचन्द्राचार्य
(५). विद्वद्रत्नमाला पृ १६६
(६). जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, अभिलेख संख्या ४३,पद्य-६ पृ° १०२
(७). श्री जुगलकिशोर मुख्तार को दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर देहली के पुराने, जीर्ण-शीर्ण गुटके से प्राप्त हुआ है।

साभार - आचार्य समन्तभद्र व्यक्तिव एवं कर्तृत्व डॉ° गुलाबचंद जैन

पार्श्वनाथ कथा : इंसान में जीव के मोह जागृत रहेंगे, उन्हे सत्य-असत्य नजर आता रहेगा - मुनि प्रणम्य सागर

– जिन धर्म सेविका श्रीमती सुशीला पाटनी (आरके मार्बल) का " व्रत गुण शीला" उपाधि से हुआ सम्मान

राजधानी में पहली बार चातुर्मास कर रहे आचार्य श्री विद्या सागर महाराज के शिष्य अर्हं ध्यान योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज महाराज ससंघ के सानिध्य में मानसरोवर के मीरा मार्ग स्थित आदिनाथ भवन में चल रही " पार्श्वनाथ कथा " के दौरान गुरुवार को मुनि श्री ने अपने आशीर्वचन देते हुए कहा की " व्रत और शील से जो युक्त होता है वो ही सम्मान पाने के लायक होते है। बारह भावनाओं के मर्म को समझाते हुए मुनि श्री ने कहा कि इंसान में जब तक जीव के मोह जागृत रहेंगे, उन्हे सत्य-असत्य नजर आता रहेगा, दुख देने वाले सुख देने वाले लगते है, अहितकारी-हितकारी नजर आने लगते है। सिर्फ निर्ग्रंथ गुरु और जिनवाणी सत्य सुना सकती है। बारह भावनाओं में आज छः भावनाएं अनित्य-अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व एवं अशुचि भावनाओं पर आशीर्वचन दिए।

मंत्री राजेंद्र कुमार सेठी ने जानकारी देते हुए बताया की गुरुवार को पार्श्वनाथ कथा का शुभारभ जिन धर्म सेविका और व्रत श्रेष्ठी श्रीमती सुशीला पाटनी (आरके मार्बल) द्वारा चित्र अनावरण, दीप प्रवज्जलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट कर किया गया, इस दौरान महिला जागृति परिषद की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला रावंका और मंत्री रश्मि सांगनेरिया सहित अन्य पदाधिकारियों द्वारा मुनि प्रणम्य सागर महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर जिन धर्म सेविका श्रीमती सुशीला पाटनी का दुपट्टा पहनाकर स्वागत सम्मान किया गया, इस अवसर पर संरक्षक निशा पहाड़िया द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट किया गया और पंडित शीतल चंद द्वारा " व्रत गुण शीला की उपाधि " का प्रशस्ति चिन्ह भेंट किया गया।

एक दिवसीय अर्हं ध्यान योग शिविर 2 अक्टूबर को, देशभर से जुटेंगे 15 हजार श्रद्धालु

अध्यक्ष सुशील पहाड़िया ने जानकारी देते हुए बताया की राजधानी जयपुर में अर्हं ध्यान योग प्रणेता मुनिश्री प्रणम्य सागर महाराज ससंघ सानिध्य में पहली बार " एक दिवसीय अर्हं ध्यान योग शिविर " का भव्य आयोजन 2 अक्टूबर (गांधी जयंती) को एसएमएस स्टेडियम पर आयोजित होगा, यह पहला अवसर है जब किसी दिगंबर जैन संत के सानिध्य में एसएमएस स्टेडियम पर इस तरह का आयोजन किया जायेगा। 2 अक्टूबर को शिविर का शुभारंभ प्रातः 5.30 बजे से आयोजित होगा जो 7.30 बजे संपन्न होगा। इस दौरान केवल जयपुर से ही नही बल्कि संपूर्ण राजस्थान के अतिरिक्त दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, कर्नाटक, महाराष्ट्र इत्यादि स्थानों से जैन समुदाय से नही बल्कि संपूर्ण समुदाय के 15 हजार से अधिक श्रद्धालुगण " अर्हं ध्यान योग " में भाग लेंगे।

जयपुर मंदिर दर्शन यात्रा 22 सितंबर से, मुनि श्री के सानिध्य में श्रद्धालुगण करेंगे सभी जैन मंदिरों के दर्शन

अभिषेक जैन बिट्टू और विनोद जैन कोटखावदा ने बताया की दशलक्षण पर्व के समापन के पश्चात मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ सानिध्य में 22 सितंबर से जयपुर के समस्त जैन मंदिरों की दर्शन यात्रा प्रारंभ होगी, इस यात्रा में समाज के श्रद्धालुगण भी सम्मिलित होगे और मंदिरों के दर्शन करेगे। यह यात्रा 10 नवंबर तक आयोजित होगी।

श्री हसमुख जैन गाँधी, इन्दौर एवं श्री डी.ए. पाटिल, जयसिंहपुर विशेषज्ञ पैनल में नामित

जैन समाज के कर्मठ समाजसेवी एवं भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री हसमुख जैन गाँधी तथा दक्षिण भारत जैन सभा के चेयरमेन श्री डी.ए. पाटिल अल्पसंख्यक आयोग, भारत सरकार के विषेषज्ञ पैनल में पुनः नामित किये गये हैं। आप विभिन्न विषयों पर सरकार को परामर्ष देंगे।

ज्ञानमती माताजी के प्रेरणा से 108 फीट भगवान ऋषभदेव की मांगीतुंगी में प्रतिमा उत्कीर्ण कराने में योगदान देने वाले डॉ. पन्नालालजी पापड़ीवाल, औरंगाबाद

- नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल

यह ऐसा व्यक्तित्व जिन्होंने अपने जीवन में अनेको ऊंचाइयों को हासिल किया। परम पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के प्रेरणा से 108 फीट भगवान श्री ऋषभदेव की मांगीतुंगी में प्रतिमा उत्कीर्ण कराने में सबसे बड़ा योगदान, अपना संपूर्ण जीवन उसके लिए समर्पित किया। लगभग 20 साल आप मांगीतुंगी मूर्ति के लिए कार्यरत रहे। इस विशालकाय मूर्ति का गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी नाम दर्ज कराया गया है। इसका पूरा कार्य आपके समक्ष, आपके निगरानी मे हुआ, आपके देखरेख मे हुआ। आप मूर्ति के शुरुआत से मूर्ति पूर्ण होने तक आप एवं सौ. कुमकुमदेवी पापड़ीवाल धर्मपत्नी के साथ मांगीतुंगी में ही रहे।

आपने देश के तीर्थक्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रो, सिद्धक्षेत्रों की सेवा की। लगभग 27 साल महाराष्ट्र अंचल के तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष पद पर रहे। आपने पूरे महाराष्ट्र के तीर्थक्षेत्रों को सिद्धक्षेत्रों को विकास की दिशा दी।

वही राजकीय क्षेत्र में पैठण में लगभग 5 बार नगर परिषद में चुनकर आए। देवी देवताओं के नाम पर जो पशु पक्षी की बली दी जाती थी उनको कई यात्रा में जाकर बचाया रोका है। लाखों की संख्या में पशुओं को बचाया।

1964 में पैठण में भगवान मुनिसुव्रतनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का संपूर्ण आयोजन आपके नेतृत्व में हुआ। उस समय आपके नेतृत्व में लगभग 400 टेंट पैठण में लगाए गए थे। और भगवान के ऊपर विमान से पुष्पवृष्टि कराई गई थी। आपने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री वसंतराव नाईक के सानिध्य में अहिंसा सम्मेलन भी पैठण में कराया था। पैठण अतिशय क्षेत्र भगवान मुनीसुव्रतनाथ के चरणों में आप ने लगभग 60 साल महामंत्री, कोषाध्यक्ष, विश्वस्त रहकर सेवा प्रदान की। अनेक पदों पर रहकर क्षेत्र का संरक्षण, संवर्धन, विकास किया।

1996 में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की 21 फ़ीट प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा मांगीतुंगी महोत्सव आपके महामंत्रीत्व नेतृत्व में हुआ। इस ऐतिहासिक पंचकल्याणक में आप ने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मनोहर जोशी को आमंत्रित किया था और वह आए थे। और उन्होंने वहां दर्शन का लाभ लिया था।

2016 में भगवान ऋषभदेव 108 फीट मूर्ति निर्माण कमेटी के महामंत्री रहे और आपको सबसे बडे भगवान ऋषभदेव के माता-पिता बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। और इस ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक के भी आप महामंत्री थे। यहां पर तत्कालीन मुख्यमंत्री देवेंद्र जी फडणवीस अनेक मंत्री, सांसद, विधायक और माननीय अमित शाहजी वहां भी पधारें थे। यह जैन जगत का सबसे बड़ा पंचकल्याणक माना जा रहा है।

आपके उद्योग, व्यापार, प्रतिष्ठान हैं। आपने डॉक्टर बनकर लोगों की बहुत सेवा की है।

रोटरी क्लब पैठण के फाउंडर प्रेसिडेंट, राजस्थान युवक मंडल के 15-20 साल अध्यक्ष, हिरवळ मंडळ के गत 40 सालों से अध्यक्ष पद पर आपने कार्य किया है।

एक विशेष बात जो जायकवाडी प्रकल्प नाथसागर बांध पैठण में है। उसका शासकीय भूमिपूजन कार्यक्रम माननीय पंतप्रधान लाल बहादुर शास्त्री के द्वारा संपन्न हुआ था। उस कार्यक्रम में आपका सक्रीय सहभाग था। उस समय भूमिपूजन आपके द्वारा भी किया गया था।

पैठण शहर के विकास में, तालुका के विकास में, संत एकनाथ सहकारी साखर कारखाना, प्रतिष्ठान कॉलेज, मराठा शिक्षण संस्था इनके साथ आपका बहुत निकट का संबंध रहा, योगदान रहा है।

परमपूज्य श्री मोरारी बापू की राम कथा, पुज्य डोंगरे महाराज की भागवत कथा, श्री संत ज्ञानेश्वर सप्त शताब्दी महोत्सव पैठण आदि में आप कार्याध्यक्ष, स्वागताध्यक्ष रहकर सक्रिय भूमिका मे रहकर कार्य किया था।

कितने भी बातें हम लिखे तो वह अपूर्ण है। ऐसे मेरे पूज्य पिताजी को नमन करता हूं। उन पर हम गर्व करते हैं।

जैन गणित के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य हेतु
महावीराचार्य पुरस्कार-2024 समर्पित

– विजय कुमार जैन, हस्तिनापुर

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा २०२१ में स्थापित महावीराचार्य पुरस्कार–२०२४ देश की प्रख्यात गणितज्ञ एवं मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर की पूर्व गणित विभागाध्यक्ष प्रो. पद्मावथम्मा को दि. जैन अयोध्या तीर्थ क्षेत्र पर गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ पावन सान्निध्य में १ सितम्बर २०२४ को प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की कुलपति एवं प्रख्यात गणितज्ञ प्रो. रेणु जैन पधारी। प्रो. रेणु जैन ने कहा कि 'प्रकृति स्वयं गणित के अनुसार चलती है एवं सभी प्राकृतिक घटनायें गणित के नियमों के अनुसार संचालित होती हैं। इसलिए जैन आचार्यों ने गणित का अपने ग्रंथों में व्यापक रूप से उपयोग किया है। हमारे विश्वविद्यालय में डॉ. अनुपम जैन के निदेशकत्व में स्थापित प्राचीन भारतीय गणित शोध केन्द्र में जैन गणित का व्यापक एवं गंभीर अध्ययन हो रहा है। केन्द्र सरकार ने भी हमारे विश्वविद्यालय में IKS Centre in Jaina Mathematics की स्थापना की है। जिसका कार्य भी भाई अनुपम जैन ही देख रहे है। हमें यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है कि सूर्य और चन्द्र ग्रहण की जो तिथि और समय NASA जैसी सुविधा सम्पन्न प्रयोगशालायें घोषित करती हैं वही हमारे ऋषि मुनियों ने अपने पोथी पंचांग के आधार पर भी शत प्रतिशत शुद्ध रूप से वर्षों पूर्व घोषित किया हैं। कार्यक्रम को अपना मंगल आशीर्वाद देते हुए गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने कहा कि 'गणित के द्वारा ही भूगोल और खगोल की गणना की जाती है बिना गणित के कोई भी कार्य संभव नहीं है। भगवान ऋषभदेव ने युग के प्रारम्भ में अपनी पुत्री सुंदरी को इसी अयोध्या की भूमि पर अंक विद्या का ज्ञान दिया था आज इसी पवित्र भूमि पर परम्परा के विलक्षण ग्रंथ गणितसार संग्रह के कर्ता महावीराचार्य के नाम पर स्थापित पुरस्कार किसी महिला को प्रदान किया जाना अत्यन्त गौरव की बात है मेरा इसके लिए बहुत बहुत आशीर्वाद है।'

मंचासीन प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने कहा कि अपनी षष्ठी पूर्ति के अवसर पर डॉ. अनुपम जैन ने मांगीतुंगी में जैन गणित के क्षेत्र में एक पुरस्कार देने की भावना व्यक्त की थी। जो कालान्तर में महावीराचार्य पुरस्कार के नाम से पूर्ण हुई और २०२१ से यह पुरस्कार नियमित दिया जा रहा है एवं यह चौथा वर्ष है। यह पुरस्कार आगामी वर्षों में भी दिया जाता रहेगा। **अनुपम गणितज्ञ डॉ. अनुपम जैन ने स्वप्रेरणा से इस पुरस्कार की राशि में भी वृद्धि कर रु. 51000/- कर दी है।** उनका पूरा परिवार भी इस कार्य में सहभागी बनकर यहाँ उपस्थित है यह प्रसन्नतादायक है। अनुपम के पूरे परिवार और पुरस्कृत विदुषी को मेरा बहुत बहुत आशीर्वाद है। पूज्य चन्दनामती माताजी ने आगे कहा कि यतिवृषभ कृत तिलोयपण्णत्ती ग्रंथ एवं सम्पूर्ण जैन भूगोल गणित पर ही आश्रित है, गणित अद्भुत विषय है और डॉ. अनुपम जी इसी जैन गणित के अध्येता है। डॉ. अनुपम जैन ने पुरस्कार की सम्पूर्ण योजना पर प्रकाश डाला एवं बताया कि प्रथम पुरस्कार पद्मश्री प्रो. आर.सी. गुप्ता (झांसी), द्वितीय प्रो. एस.सी. अग्रवाल (मेरठ) तथा तृतीय प्रो. एस.के. बंडी (इन्दौर) को प्रदान किया जा चुका है। अब निर्णायक मण्डल की सर्वसम्मत अनुशंसा के आधार पर चौथा पुरस्कार महावीराचार्य कृत गणितसार संग्रह का कन्नड़ भाषा में अनुवाद करने वाली मैसूर विश्वविद्यालय की गणित विभागाध्यक्ष प्रो. पद्मावथम्मा को प्रदान किया जा रहा है। उनके यहाँ पधारने से हम सब कृतज्ञ हैं। विशिष्ट अतिथि शीतलतीर्थ की अधिष्ठात्री डॉ. सविता जैन ने कहा कि 'गणितसार संग्रह के रचयिता महावीराचार्य के नाम पर डॉ. अनुपम जैन (अनुपम गणितज्ञ) परिवार इन्दौर द्वारा स्थापित वार्षिक पुरस्कार प्रदान करने कि श्रंखला में वर्ष २०२४ में बैंगलौर की प्रो. पद्मावथम्मा को इस पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाना अत्यन्त शुभ एवं सुखद संदेश है। जैन गणित पर कार्य करने वाली देश की विभिन्न प्रतिभाओं के लिए उत्साहवर्धन का हेतु है। जीवनयापन में भाषा के अतिरिक्त यदि कोई आवश्यक तत्त्व है तो वह गणित है। इस पुरस्कार के माध्यम से जैनाचार्यों का गणितीय अवदान भी प्रकाश में आयेगा। डॉ. अनुपम जैन अपनी पुस्तक शून्य का आविष्कारक कौन? में आचार्य यतिवृषभ द्वारा सर्वप्रथम शून्य के प्रयोग का विस्तृत विवरण दिया है। जैनाचार्य द्वारा गणितीय अवदान को प्रकाश में लाने के लिए डॉ. अनुपम जैन (अनुपम गणितज्ञ) परिवार इन्दौर भी बहुत बहुत बधाई का पात्र है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने कहा कि डॉ. अनुपम जैन विगत चार दशकों से संस्थान से जुड़ें है तथा अकादमिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन कर रहे हैं। जैन गणित के अध्ययन को बढ़ाने के लिए उन्होंने जो भी प्रस्ताव दिये हैं उन सबको संस्थान उनके साथ मिलकर पूर्ण करेगा। समारोह में पधारे तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ की कार्यकारिणी के सदस्यों का स्वागत है।

डॉ. अनुपम जैन के सुपुत्र श्री अंबुज जैन ने आभार मानते हुए कहा

कि हमारा परिवार एवं संस्थान अलग अलग नहीं है हम बचपन में गर्मियों की छुट्टियों में जम्बूद्वीप (संस्थान) में आकर रहते थे उस समय बड़ी माताजी और छोटी माताजी ही थी आज तो बहुत सी बहनें भी माताजी बन गई है जिसे देखकर हमारे परिवार को बहुत प्रसन्नता है। मैं प्रो. पद्मावथम्मा, उनके परिवार तथा यहाँ पधारे सभी विद्वानों का आभार मानता हूँ। पूज्य स्वामी जी ने इस पुरस्कार के रूप में विद्वानों को सम्मान करने का हमें मौका दिया है इसके लिए भी हम संस्थान के आभारी हैं। समारोह में युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीवनप्रकाश जैन, अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री अमरचंद जैन एवं दो दर्जन से अधिक विद्वानों की गौरवपूर्ण उपस्थिति रही। सभी का स्वागत सम्मान अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौर एवं सशक्त संचालन श्री विजय कुमार जैन महामंत्री ने किया।

मुनि श्री वांग्मय सागरजी ने सल्लेखनापूर्वक समाधिमरण

आर्षमार्ग, श्रमण परंपरा को बड़ा योगदान, एकांतवाद के निरसन में बड़ी भूमिका निभानेवाले अनेक पुरस्कारों, उपाधियों से विभूषित पंडित श्री शिवचरण लाल जी वर्तमान में पूज्य मुनिश्री वाङ्गमय सागर जी की सल्लेखना पूर्वक समाधि तेलंगाना के मेड़क जनपद के कुलचारम में विघ्नहरण पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र में कल सोमवार 9 सितंबर को रात्रि 9.47 पर अन्तर्मना तपाचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महामुनिराज के संघ सानिध्य में हो गयी। विगत 2 8 अगस्त को अन्तर्मना ने उनको मुनिदीक्षा प्रदान कर महाव्रतों का आरोपण किया था व 19 अगस्त रक्षाबंधन के दिन उनकी क्षुल्लक दीक्षा हुई थी व उन्हें वांग्मय सागर नाम दिया गया था।

पूरे देश के प्रमुख स्थानों के साथ ही अमेरिका जाकर उन्होंने धर्म की प्रभावना की । श्रमण भारती मैनपुरी के संस्थापक सदस्य के साथ ही मैनपुरी जैन समाज के लिए बहुत योगदान दिया। उन्होंने जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में एक कमरे का भी निर्माण कराया। 2002 के कम्पिल पंचकल्याणक में वह समिति के अध्यक्ष रहे। मुनि श्री सहज सागर जी ने बताया कि मैंनें 77 और 79 में उनके साथ ही अहमदाबाद व सूरत साथ जाकर ज्ञान प्राप्त किया था व उनके बड़ा मंदिर व नेमिनाथ जिनालय में उनकी स्वाध्याय सभा से बहुत लाभ मिला। अंतिम समय में उनकी धर्मपत्नी उनके सुपुत्र प्रशांत, पुत्रवधु अन्तर्मना के प्रिय शिष्य प्रवर्तक मुनिश्री सहज सागर जी, जो पंडित जी के गृहस्थाश्रम के भाई भी हैं, ने जानकारी देते हुए बताया कि मैनपुरी के पंडित जी 25 जुलाई को अपने सुपुत्र प्रशांत के पास से अपनी धर्मपत्नी व पुत्र के समधी श्री राकेश जी के साथ यहां पधारे थे व 30 जुलाई को उन्होंने 85 वर्ष की आयु में पूरी चेतना व निरोगावस्था में सल्लेखना हेतु आचार्य श्री को श्री फल अर्पित किया था जिस पर विचार कर उन्हें दीक्षा प्रदान की थी। पंडित जी बहुत विद्वान थे। पांच हजार से ज्यादा श्लोक व गाथायें उन्हें कंठस्त थीं। घिरोर के पास नगला इंद में श्री बटेश्वरीलाल जी के परिवार में जन्में 1970 में मैनपुरी आये। आपका कपड़े का बड़ा व्यापार था उसके साथ ही आपने खुद स्वाध्याय के बल पर बहुत ज्ञान का अर्जन कर सोनगढ़ व एकांतवाद का पर्दाफाश कर श्रमण परंपरा के लिए अपना महती योगदान दिया। शास्त्री परिषद के संरक्षक व तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघ के पूर्व अध्यक्ष अनेक पुरस्कारों व उपाधियों से विभूषित किये गए।

दश लक्षण पर्व पर अर्चना, समधी राकेश जी सुपुत्रियां संध्या, प्रतिमा, कविता सपरिवार, श्रीमती साधना मातेश्वरी डॉ सौरभ उनके साथ ही थे।

अन्तर्मना प्रसन्न सागर जी ने अपने शिष्य को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुये कहा कि पंडित जी ने ये पुरुषार्थ कर अपना जीवन तो सुधार ही लिया अपितु विद्वानों के लिए बहुत बड़ा संदेश दिया है कि ज्ञान का फल ऐसा चारित्र अंगीकार कर सल्लेखना लेना है न कि अस्पताल में जाकर मरना।

जैन तीर्थ कुलचारम में चल रही समाधि की अद्भुत वैज्ञानिक प्रक्रिया

- सुरेश जैन (आई.ए.एस.), भोपाल,

संस्कृति संरक्षण और संवर्द्धन तथा सेवा और समर्पण के जीवंत प्रतीक पुष्पगिरि प्रणेता परमगुरु गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज, उनके परम शिष्य अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज, उनके प्रमुख शिष्य मुनिवर सहजसागर (डॉ. सुशील जैन, मैनपुरी) तथा राष्ट्र के प्रकाण्ड विद्वान समाधि सम्राट वांग्मयसागर जी (पण्डित शिवचरणलाल जी, मैनपुरी) प्रभृति सभी साधुओं और आर्यिका माताओं को शत-शत नमोस्तु।

मुनि सहजसागर जी के साथ क्षपक मुनि श्री वांग्मयसागर जी

२. आध्यात्मिक क्षेत्र में कुलचारम तीर्थ पर देश के वरिष्ठतम विद्वान क्षपक और समाधि तंत्र के सुप्रसिद्ध विद्वान वांग्मयसागर जी अपनी ही आत्मा और शरीर पर समाधि की सैद्धांतिक प्रक्रिया का सफलतम प्रयोग कर रहे है। उनके दर्शन करने काहमें विरला और अद्भुत अवसर मिला है। दुर्लभतम सुयोग मिला है। हम सबने यह अनुभव किया कि हम पूर्णत: जाग्रत समाधि सम्राट के विजयोत्सव समारोह के परम आनन्द में सहभागी हो रहे है। उन्होंने अपनी सभी इन्द्रियों, भूख और प्यास पर पूरी विजय प्राप्त कर ली है। अपने शरीर पर अपनी आत्मा का पूरा शासन सुस्थापित कर लिया है। मुनिवर के चेहरे की चमक और दमक, उनके वृद्ध शरीर से झलकते आत्म-विश्वास और प्रभावी वाणी ने हमें अत्यधिक प्रभावित किया है।

३. पूज्य वांग्मयसागर जी ने मोक्ष पथ पर आगे बढ़ने के लिए ब्रह्मचारियों, विद्वानों और हम जैसे वरिष्ठ नागरिकों के लिए आदर्श और अनुपम उदाहरण उपस्थित कर दिया है। अपने जीवन भर किए गए सतत गंभीर स्वाध्याय का सर्वोत्तम फल और लाभ प्राप्त कर लिया है। आपने जैन संस्कृति की आधारभूत सल्लेखना की शास्त्रीय वैज्ञानिक प्रक्रिया को पूरे सूर्य के चमकते प्रकाश में अपने जीवन में आत्मसात कर लिया है और संयम के उपकरण - पिच्छी और कमण्डलु स्वीकार कर दिगंबरत्व का श्रेष्ठतम उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है।

४. आपके द्वारा विरचित नैनागिरि वंदना – **नैनागिरिं तं तीर्थं नमामि** – अत्यंत लोकप्रिय और लोकप्रसिद्ध है। आपका - नमामि शांति जिनवरम - गीत पुन: पुन: पठनीय और श्रवणीय है।

५. गुरुदेव ! आप बड़े सौभाग्यशाली है कि आपने अपने आसन्न मरण के संकेत यथासमय समझकर अपने असाधारण साहस पूर्वक आचार्य प्रसन्नसागर जी के निर्देशन में सल्लेखना के वैज्ञानिक पथ पर क्रमश: आगे बढ़ने का दुर्लभतम अवसर प्राप्त कर लिया है। हम उनके पूरे परिवार के साथ-साथ उनके बेटे प्रशांत को साधुवाद देते है कि वे सभी मिल-जुलकर पूरी निष्ठापूर्वक वैयावृत्ति करते हुए पुण्यलाभ प्राप्त कर रहे हैं और पूरे विष्व के समक्ष अनुपम समाधि का श्रेष्ठतम उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है।

६. श्रद्धेय वांग्मयसागर जी ने अपने जीवन भर पूरे श्रुत स्कंध और सम्यकज्ञान की ऊर्जा का संचय किया है। मुनिवर सहजसागर जी के सतत निर्देशन में गत माह से वे इसी पावन ऊर्जा का उपयोग कर अपने विकारों को दूर करते हुए जागृति, प्रसन्नता, निष्ठा और एकाग्रता पूर्वक णमोकार मंत्र और ओम् नम: सिद्धेभ्य: जपते हुए पूर्णत: प्रसन्न हैं और समाधिमरण के पावन पथ पर वीरतापूर्वक आगे बढ़ रहे है।

७. दिनांक ११.८.३९ को जन्में मुनिवर वांग्मयसागर जी ने गत रक्षाबंधन के अवसर पर अपने ८६ वें जन्मदिन में प्रवेश करते ही क्षुल्लक दीक्षा ली। भाद्रपद कृष्णा दशमी बुधवार संवत् २०८१ दिनांक २८ अगस्त, २०२४ को मुनि दीक्षा लेते हुए २८ मूलगुण धारण किए।

८. संत संस्कृति के महानतम संत पूज्य वांग्मयसागर जी शांति, सरलता और ममता की जीवंत मूर्ति है। आपने कभी भी, कहीं भी अपनी वरिष्ठता का प्रदर्शन नहीं किया और न ही किसी विवाद को जन्म दिया। आपका जीवन खुली किताब रहा है, जिसमें आपके जीवन की प्रगति के सोपानों का अवलोकन और दर्शन सहज ही किया जा सकता है।

९. आपने सर्वोत्कृष्ट क्षपक की समाधि का अनुपम और असाधारण उदाहरण उपस्थित कर समाधिमरण की वैज्ञानिक पद्धति को विश्व के समक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर दिया है। आपने शुद्ध-स्वस्थ मस्तिष्क तथा संपूर्ण विवेक के साथ पूर्णत: जाग्रत तथा चैतन्य स्थिति में जैन आगम पर आधारित अपनी समाधि साधना के प्रवचन दिनांक १९ अगस्त, 2024 में सभी से क्षमायाचना करते हुए अपने गुरुओं के प्रति अपना नमोस्तु निवेदित किया है। यह मार्मिक प्रवचन पूरे विश्व के समक्ष आपकी हिमालयीन आध्यात्मिक ऊँचाई और समता की पूरी गहराई को प्रदर्शित करता है। पवित्रता और पावनता से ओतप्रोत श्रेष्ठतम आत्मा का यह प्रभावी, बिरला, असाधारण और अनूठा प्रवचन भारतीय सांस्कृतिक जगत के इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जावेगा। भौतिकता की इस सदी में भी शास्त्रीय सर्वोत्तम महासमाधि का अनुपम प्रकाश स्तंभ बनेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि आपने अपनी मृत्यु का सही-सही पूर्वाभास कर लिया है। हम श्रमण परंपरा के आप जैसे ध्रुवतारे के चरणों में हम अपने भावपूर्ण सुगंधित श्रद्धासुमन समर्पित करते है।

१०. गौ वच्छ प्रीति से ओतप्रोत ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी मुनिवर वांग्मयसागर जी ने अपने शरीर को ही व्यावहारिक समाधिमरण की प्रयोगशाला बना लिया है। उन्होंने अपनी प्रभावी वाणी और मनमोहक,

आकर्षक और धवल व्यक्तित्व से जन-जन को प्रभावित कर अपनी ओर आकर्षित कर लिया है।

११. मुनि प्रवर ने जीवन में सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धांत को जीकर दिखाया। वे हित मित और मृदु भाषी है। शिशु और संत जैसी सहज मुस्कराहट उनके मुख मण्डल पर सदैव तैरती रहती। अपने गृहस्थ जीवन में वे शरीर की सादी पोशाक, मुख की मुस्कराहट और प्रभावी मधुर वाणी से वे सभी को सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। वे जीवन भर जन-जन से जुड़े रहे। उन्होंने सहस्त्रों जैन ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। जिनवाणी का चिंतन, मनन, प्रचार और प्रसार किया।

१२. गुरुदेव ने तखत से उठ-उठ कर हमें, हमारी धर्मपत्नि न्यायमूर्ति विमला जी, भोपाल विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालिक अधिकारी रहे डॉ. विनोद मोदी और उनकी पत्नि हिन्दी की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चंदा मोदी को आत्मीय स्नेह दिया। आशीर्वाद और उपदेश दिया। उन्होंने दृढ़तापूर्वक स्पष्ट निर्देश दिए कि हम सभी अपने शेष जीवन में कभी क्रोध नहीं करने की अटूट प्रतिज्ञा ले। धीरे-धीरे होटल में भोजन करना बंद करें।

१३. अगस्त, 2024 के अंतिम दिन की सांध्यकालीन तथा सितम्बर के प्रथम दिन की प्रात:कालीन वेला में मुनिवर से हमारी यह आत्मीय विरली, दुर्लभ और असामान्य भेंट हुई। ममता और परम स्नेह से ओतप्रोत वातावरण में उनके तथा मुनिवर सहजसागर के साथ अपने जीवन के विरलतम क्षण बिताकर हम सबको आशातीत प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जंबू प्रसाद जी तथा जैन संस्कृति के प्रति पूर्णत: समर्पित महालक्ष्मी चेनल दिल्ली के संचालक श्री शरद जैन उपस्थित थे। गुरुवर के साथ बैठकर ऐसा अनुभव हुआ कि हम अपने परिवार के निकटस्थ सदस्यों की पारिवारिक और सहज बैठकों की स्वाभाविकता का आनन्द ले रहे है।

१४. मुनिवर सहजसागर जी ने हमें मंगल आशीर्वाद देते हुए कहा कि सुरेश जी ! ८० वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर भी आपका स्वास्थ्य, ऊर्जा और उत्साह सराहनीय है। आपके जन्म दिन १७ अक्टूबर, 1945 को एकादशी थी और अब ८० वें जन्म दिन पर शरद पूर्णिमा है। यह सुखद संयोग है कि आपका जन्म दिन इस वर्ष आचार्य विद्यासागर जी और गणिनी माता आर्यिका ज्ञानमती जी के जन्म दिन से मिल गया है। हम सबका आशीर्वाद है कि यह जन्म दिन आपके और आपके पूरे परिवार के लिए बहुत शुभ और मंगलदायक सिद्ध हो। इसी बीच श्रद्धेय वांग्मयसागर जी ने यह घोषणा कर दी कि सुरेश जी अब हम कुछ दिनों के ही मेहमान है। आप तो अभी भी सुरेश है। सचमुच सुरेश बनकर हमारे पीछे-पीछे चले आओ। आस्था पूर्वक पुरुषार्थ करते हुए आत्मा से परमात्मा बनने के मंगल पथ पर सदैव आगे बढ़ते रहो।

१५. आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी और सहजसागर की गोदी में कुछ क्षण अपना सिर रखकर हमें अपूर्व शांति मिली। ऐसी अभिलाषा हुई कि उनकी गोदी में कुछ देर और सिर रखकर कुछ क्षणों की झपकी ले लूं। इस प्रकार अपने जीवन के कुछ सर्वोत्तम और मधुरतम क्षणों का हमने असीमित और आशातीत आनन्द प्राप्त किया।

१६. आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी ने अपनी प्रबलतम ध्वनि में मंत्रोच्चारण करते हुए भगवान पार्श्वनाथ की विशाल मूर्ति का अभिषेक और बड़ी शांतिधारा कराई। आदरणीय सुमेर पाण्डया जी के युवा पुत्रों - प्रिय सुमित तथा राहुल के हाथों के सपोर्ट से नई ऊर्जा प्राप्त करते हुए हमने उत्साह और सफलतापूर्वक शांतिधारा संपन्न की।

१७. प्रसन्न-कण्ठ से निकले शक्ति संपन्न वजनदार बीजाक्षरों की सकारात्मक ऊर्जा से मंदिर गुंजित और कंपित होने लगा। अपार शांति छा गई। शंख और घण्टानाद की मधुर ध्वनि से तन और मन तरंगित हो गया। पूरा शरीर पुष्प बनकर हवा में तैरने लगा। रोम-रोम रोमांचित हो उठा। इन्द्रदेव पूरे समय पूरे तीर्थ परिसर में शीतल वर्षा करते रहे। मंदिर से बाहर निकलते ही इन्द्र देव ने हमें वर्षा जल से सराबोर कर दिया। पीली धोती और दुपट्टा पहने हुए हमको शिख से नख तक शुद्धतम जल से भिगो दिया। हमें अभिनंदित और प्रसन्नचित्त कर दिया।

१८. कुलचारम में भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति मिलते ही जैन मिसनरी श्री निर्मल जी सेठी अपने मित्रों – डॉ. शीतल गांधी, सोलापुर, सुमेरचन्द्र पाण्डया, पदमचन्द्र पाण्डया और किशोर जी हैदराबाद को अपने साथ लेकर दिनांक २८.४.१९९७ को कुलचारम पहुँचे। स्थानीय व्यक्तियों से चर्चा कर भगवान पार्श्वनाथ की ११ फीट ३ इंच श्याम वर्ण खड्गासन पाषाण मूर्ति प्राप्त की। मूर्ति की शीघ्र प्रतिष्ठा कराने, जिनमंदिर, अतिथिगृह और भोजनालय बनाने का निर्णय लिया। हैदराबाद से ८० किलोमीटर दूरी पर प्राकृतिक पहाड़ियों और हरियाली के बीच स्थित कुलचारम नगर रमणीय तीर्थ के रूप में विकसित हो चुका है। भगवान पार्श्वनाथ की इस मूर्ति का दुग्धाभिषेक देखते ही भगवान गोमटेश्वर बाहुबली के महामस्तकाभिषेक का दृश्य हमारे समक्ष जीवंत हो उठता है। इस मूर्ति के चरणों से लेकर सिर तक कुण्डलाकार सर्प अत्यंत सुन्दर और आकर्षक है।

१९. तीर्थ अध्यक्ष श्री राजेश पहाड़े और मंत्री श्री सुमेरमल पाण्डया ने हम लोगों के आतिथ्य और भोजन का पूरा ध्यान रखा। स्थानीय न्यायालय की मजिस्ट्रेट श्रीमती रीता लालचन्द्र के नेतृत्व में उनके सहायकों और पुलिस अधिकारियों ने हमारी यात्रा को पूर्णत: सुविधा और संतोष जनक बना दिया।

२०. मेडक में वर्ष १९२४ में प्रतिष्ठित विश्व के द्वितीय विशालतम यीशू मंदिर के १०० वर्ष पूरे होने पर दर्शन किए। इस चर्च के स्वर्णिम इतिहास का यह तथ्य उल्लेखनीय है कि मेडक में भीषणतम अकाल के दिनों में श्रमिकों को भोजन और खाद्य सामग्री देकर उनके सतत श्रम से प्रभु यीशू के इस विशाल केथेड्रल का निर्माण किया गया है। प्रात: ७.३० से ८ बजे तक प्रार्थना में शामिल हुए। असाधारण ऊर्जा से ओतप्रोत सुन्दरतम वातावरण का भरपूर आनन्द लिया। निश्चित ही किसी भी धर्म के सांस्कृतिक विकास में प्रार्थना की प्रमुख भूमिका होती है।

२१. बिट्रिश सेना के पादरी चार्ल्स वाकर पोसने वर्ष १८९७ में मेदक आए। उन्होंने स्थानीय गरीब श्रमिकों की सेवा की। १९१० में चर्च की नींव रखी। क्रिश्चियन मिसनरी ने मेदक में दुनिया की सबसे बड़ी और दूसरी चर्च का निर्माण कराया और वर्ष १९२४ में लोकार्पित किया। चार्ल्स वाकर पोसने ने अनेकानेक कठिन परिस्थितियों और द्वितीय विश्वयुद्ध की विनाशकारी विभीषकाओं को असाधारण परिश्रम से सफलता पूर्वक झेलते हुए अकाल पीड़ित गरीब श्रमिकों को भोजन और घर की सुविधा प्रदान कर इस चर्च का निर्माण कराया। भारत के सम्राट और साम्राज्ञी द्वारा उन्हें कैसर-ऐ-हिन्द की उपाधि से विभूषित किया।

शिखरजी की रक्षा से जुड़े तथ्य

सदभावना पारमार्थिक न्यास, इंदौर की ओर से
अध्यक्ष निर्मलकुमार पाटोदी की प्रस्तुति

सारांश:- सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी पहाड़ पर अधिकार और प्रबंधन को लेकर जो विवाद है, उस पर वर्तमान में प्रकरण सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन है। श्री माणिकचंद्र जव्हेरी-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के संस्थापक रहे हैं। आपने इस संस्था के महामंत्री के पद का दायित्व निभाया है। जीवन के अंतिम समय तक दिन-रात एक करके धर्म और समाज के हित मे शिखर जी पहाड़ की रक्षा के लिए अथक तथा अतुलनीय परिश्रम करके स्तुत्य पुरुषार्थ किया था। आपने अन्य तीर्थों के लिए भी योगदान किया है। समाज की हर क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने में अपनी रचनात्मक भूमिका का निर्वाह किया है। शिखर जी पहाड़ सदा से दिगम्बर समाज का था, रहा है और इसका प्रमाण निम्न पुस्तक है:-ब्र. शीतलप्रसाद जैन, दानवीर माणिकचंद्र, मुम्बई, सं. 1991, जैन समाज में वर्तमान में व्याप्त उलझनों को सुलझाने के लिए दानवीर माणिकचन्द झवेरी के जीवन से आज भी प्रेरणा ली जा सकती है। ऐतिहासिक घटनाक्रम यहां प्रस्तुत है।

सम्मेदाचल पर्वत (हजारीबाग-बिहार) महा पवित्र तीर्थ पर वंदना के लिए वि. संवत 1953 (1896 ई.) के शीतकाल में सेठ माणिकचंद जवेरी, बम्बई के छोटे भाई सेठ नवलचंद कुटुम्ब सहित अपने भांजे चुन्नीलाल झवेरचंद को साथ लेकर पधारे। आप स्नान कर धुली सफेद धोती और चादर ओढ कर अष्ट द्रव्य, कलश झारी, रकाबी और पानी छानने का छन्ना लेकर साथियों के साथ पहले सीतानाले पहुंचे। यहां सामग्री धोई और कलश में प्रक्षाल के लिए जल भरा। सीतानाले से श्री कुन्थुनाथ स्वामी की टोंक तक आते हुए पहाड़ का चढ़ाव आपको कुछ विकट मालूम हुआ। आपने देखा जो वृद्ध स्त्री पुरुष व बालक हैं, उनको भी इस चढ़ाई को चढ़ने में बहुत कष्ट हो रहा है। परन्तु भक्तिवश सब चढ़ रहे हैं। नवलचंद जी के मन में विचार आया कि यहां सीढ़ियां बन जानें तो सबको बहुत सुविधा होगी। आपने सभी कूटों पर चरण पादुकाओँ की प्रक्षाल की, अष्ट द्रव्य चढ़ाया, प्रदक्षिणा दी और और बड़े भाव पूर्वक भक्ति की। बीच में जल मंदिर में तीन प्रतिबिम्ब थे। इनमें बीच की वेदी में श्वेताम्बरी तथा दो आसपास की वेदियों में विराजित दिगम्बरी प्रतिमाएं थी। दिगम्बरी प्रतिमाओं की बड़े भक्तिभाव से प्रक्षाल- पूजन किया। शाम पड़ते-पड़ते यात्रा करके नीचे आ गये।

रात्रि को चुन्नीलाल जी ने यात्रियों की एक सभा बुलाई। 4000 सीढ़ियां पहाड़ पर बनवाने का निश्चय किया गया और यात्रियों से चंदा किया गया। सबसे पहले 1001 रु. अपनी तरफ से दिये। कुल राशि 6014 रुपये एकत्र किये गये। सीढ़ियां बनवाने का काम उपरैली की कोठी के मुनीम बाबू हरलाल जी के सुपुर्द किया गया। उन्होंने सीढ़ियां बनवाना प्रंभ कर दिया, किंतु उनका स्वर्गवास हो जाने से बाबू राघवजी को यह काम सौंपा गया।…

…सेठ नवलचंद जी के प्रयास से संवत् 1953 सन् 1898 में सीतानाले से कुन्थुनाथ स्वामी की टोंक तक सीढ़ियां बनवाने के काम में 700सीढ़ियां बन गयी थी। श्वेताम्बरी लोगों को यह काम पसंद न आया। वास्तव में सीढ़ियां सभी यात्रियों की सुविधा के लिये बनवाई गयी थी। इस सद्भावना का कुछ भी विचार न करके श्वेताम्बरीनभाईयों ने 12 जनवरी 1899 को रात्रि के समय चोरी से 205 सीढ़ियां तुड़वा डाली। दूसरे दिन पुलिस में रिपोर्ट की गयी। फौजदारी मुकदमा नम्बर 1/1900 गिरडीह कोर्ट में चलाया गया। हजारीबाग के अपर न्यायाधीश ने 9/9/1901 के आदेश में निर्णय दिया कि श्वेताम्बरों द्वारा साढ़ियां तोड़ना अपकृत्य है।

दिगम्बरों को सीढ़ियां बनाने का अधिकार है। श्वेताम्बर कोठी के दो भाइयों को 8 दिन की सजा व मचलके हुए। मुकदमा नये मुनीम बीसपंथी कोठी के राघव जी ने चलाया था। इस कार्यवाही की जानकारी 4000 पर्चे छपाकर हाथरस में दी गयी। महासभा ने मुकदमे की पैरवी के लिए एक कमेटी बनायी थी। उधर श्वेताम्बरियों ने कलकत्ता हाईकोर्ट में अपील की। खेदजनक कारण यह बना कि दिगम्बरियों के प्रमाद से ठीक से पैरवी न होने के कारण श्वेताम्बर भाई बरी हो गये।…

…महासभा ने वकीलों की राय लेकर दीवनी मुकदमा चलाने का प्रस्ताव स्वीकार किया। सभा के कार्यो का विस्तार हो इस दृष्टि से पंडित गोपालदास जी के प्रस्ताव पर 'जैनमित्र' निकालने का निश्चय किया गया। सम्पादक पं. गोपालदास जी बरैया और प्रोप्रायटर सेठ माणिकचंद जी नियत हुए। जब से शिखर जी का काम महासभा ने बम्बई सभा के आधीन किया था, तब से ही सेठ माणिकचंद जी तीर्थरक्षा में पूरी तरह से सक्रिय हो गये थे। रात-दिन शिखरजी की सुव्यवस्था में लगे रहते थे। आपका ही प्रयास था, जिसके फलस्वरूप पहाड़ पर बनाई गई सीढ़ियों को तोड़ने के हर्जाने में श्वेताम्बरियों पर 5000 रु. की दीवानी नालिश की गई थी और रुपये 1875 की डिक्री श्वेताम्बरियों पर विद्वान जज साहब ने दी थी। "The Swetambari sect can not deprive the Digambari sect of their right of way over the path. The Defts individually and as agent of and servents of the Swetambary sect had, in my opinion no right to demolish the stairs and remove the same…They are here to wanted not to commit further mischief and resist the construction of the stairs. They shall pay Rs. 1845/- as damages to the plaintiff (Digambers)

संवत 1958 में माणिकचंद जी के बड़े भाई सेठ पानाचंद जी परिवार के साथ शिखरजी की यात्रा पर गये थे। भगवान पार्श्वनाथ जी की टोंक पर मालूम किया कि कलकत्ते वाले श्वेताम्बर राय बद्रीदास जी इस टोंक पर माह सुदी 13. को चरणों के स्थान पर प्रतिमाजी निराजमान करना चाहते हैं तथा आमंत्रण पत्रिकाएं भी निकाली हैं। पानाचंद जी ने वहीं से इस जानकारी की चिट्ठी माणिकचंद जी को लिखी।

बम्बई में खबर होते ही श्रीमान् लार्ड कर्जन को तार दिया गया कि पार्श्वनाथ जी की टोंक पर जैसे सदा से चरण पादुकाएं स्थापित हैं, वैसी ही रहें—प्रतिमा विराजमान न की जावें। बाद में सेठ माणिकचंद जी समाज के साथियों के साथ शिखर जी पहुंचे। अन्य स्थानों से भी प्रमुख लोगों को बुला लिया। था। इस कार्य हेतु 1000 रु. एकत्रित हो गये थे। इसी बीच लार्ड कर्जन ने रांची के डिप्टी कमीश्नर को जरूरी प्रबंध का हुक्म दिया। टोंक से चरण उखाड़ने की मनाही का हुक्म आ गया। सरकार के इस न्याय से सेठ जी व सर्व दिगम्बर जैन समाज को संतोष हुआ। बम्बई आने पर माणिकचंद जी को खबर मिली की प्रतिष्ठा के दिन 200 कांस्टेबल, दरोगा व सुपरिटेन्डेन्ट को टोंक पर भेजा गया है, जिससे मूर्ति की प्रतिष्ठा न हो सकी। सदा की भांति चरण विराजित रहे।

सेठ जी की विशेषता थी कि, वे किसी भी काम के लिये आगे होकर धनराशि की घोषणा कर देते थे। शिखरजी की उलझन को सुलझाने के लिये सरकार से पहाड़ खरीदने का विचार बना। खुर्जा में तीर्थक्षेत्र कमेटी का अधिवेशन 28 जून को बुलाया गया था, जिसमें सेठ जी ने अपनी ओर से दस हजार रु. देने की घोषणा की। …सहयोग राशि दिल्ली, खुरजा, सहारनपुर, रावलपिंडी, अजमेर, इंदौर, शोलापुर, जयपुर, बिजनौर, नजीबाबाद, गया, सिकन्दराबाद, देहरादून, ललितपुर, अलपर, रायचूर, लश्कर, बड़नगर, महू, निमाड़, बनारस, सादरा (गुजरात), उदयपुर, ईडर और अम्बाला से मिली।…117 साल पहले दो लाख रु. सम्मेद शिखरजी तीर्थ को बचाने के लिए एकत्रित हो गये। सेठ जी के वचनों का कोई भी उल्लंघन नहीं करता था। उनकी न्यायप्रियता, विचारवान, गंभीरता, सहनशीलता, पुरुषार्थ तथा धर्म एवं जाति की सेवा में दिन-रात लगे रहने की विशेषता का प्रतिफल था।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से 18 जून को बड़े लॉट साहब को भेजे गये तार का जवाब डिप्टी सेक्रेट्री गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया के पत्र क्रमांक 1749 दिनांक 16/07/1907 का सेठ जी को प्राप्त हुआ, जिसमें लॉट साहब स्वयं मौके पर जायेंगे। जैनियों को अपना पक्ष रखने का मौका मिलेगा तथा जब तक छोटे लॉट साहब जांच न कर लेंगे, बंगलों के पट्टे न दिये जायेंगे। पत्र के कुछ आशय: (I am to add that no action whatever will be taken towards granting leases on the hill until the enquiry has been held by his Honour the Lieuteuant Governor:) सेठ माणिकचंद जी ने बात को बढ़ते हुए देखकर बम्बई में सलाह की, तदनुसार यदि पालगंज के राजा अनुमति देने से इंकार कर दें और श्वेताम्बरी लोग साथ दें, तो शायद यह उपसर्ग दूर हो सकता है। इसलिषे आपने मिती आषाढ़ सुदी 4 तारीख 14 जुलाई के दिन बम्बई से अपने भानजे सेठ चुन्नीलाल भवेरचंद को लाला प्रभुदयाल जी, सेठ पदमचंद जी, मि. चुन्नीलाल बी.ए सुपरिन्टेन्डेन्ट जैन बोर्डिंग बम्बई, आदि भाईयों के साथ गिरिडीह भेजा। आरा से बाबू देवकुमार जी व बाबू किरोड़ीचंद भी आए। बहुत कुछ चेष्टा भी की किंतु श्वेताम्बर समाज कलकता के राय बद्रीदास जी के असहमत रहने से मेल नहुआ। तथा पालगंज के राजा से भी सफलता न मिली।

एक अगस्त 1907 को शिखरजी पहाड़ पर कमिश्नर साहब आये। बाबू धन्नूलाल अटार्नी, सेठ परमेष्टीदास व बम्बई के लोगों ने कहा कि हम शिखरजी पहाड़ की पवित्रता को आंच आना सहन नहीं कर सकते।…सेठ माणिकचंद जी को डिप्टी कमिश्नर हजारीबाग से सूचना मिली कि लॉट साहब 28,29,30 अगस्त 1907 को शिखरजी पहाड़ पर आवेंगे 26 अगस्त को बीसपंथी कोठी में लाला सुल्तान सिंह दिल्ली के सभापतित्व में सभा हुई, जिसमें स्मरण पत्र सुनाकर मंजूर कराया। उस पर हस्ताक्षर कराए गए। 65 सदस्यों की सूचि बनायी गई। 27 अगस्त 1907 को लॉट साहब लॉर्ड फ्रेजर पर्वत पर निरीक्षण करने गये। 28 अगस्त को लॉट सा. ने 15 दिगम्बरियों के साथ पार्श्वनाथ स्वामी की टोंक से कुंथुनाथ स्वामी की टोंक तक और बाद में सीतानाले तक आये। श्वेताम्बरियों को भी बुलाया था पर उनमें से कोई न पहुंचा। प्रतिनिधियों से लॉट साहब ने रास्ते में ही चर्चा की, लोगों ने पर्वत की पवित्रता के बारे में समझाया। दोपहर 2 बजे लॉट साहब बंगले पर आ गये। यहां राय बद्रीदास आदि सात-आठ श्वेताम्बरी तथा कुछ दिगम्बरी मिले। शिखरजी में लगभग 100 श्वेताम्बरी और 2500 करीब दिगम्बरी आ गये थे। 29 अगस्त को लॉट साहब पहाड़ से नीचे उतरे। दिगम्बर मंदिर में कपड़े के जूते पहनकर गये। पाण्डाल में लाला सुल्तान सिंह रईस, देहली ने ज्ञापन पढ़ा और सुन्दर कास्केट में रखकर भेंट किया, जिसे धन्नुलाल अटार्नी ने बनाया था।

उत्तर में लॉट साहब ने भाषण दिया, जिससे उपस्थितों को संतोष नहीं हुआ तथापि आखिरी हुकम बंद रखा।

लॉट साहब ने आगे की चर्चा हेतु दो नाम मांगे थे, जो ये दोनों नाम सेठ माणिकचंद जी ने दिये थे। कलकत्ते में पर्वत रक्षा के लिये दफ्तर खोलना तय हुआ, उसमें बम्बई प्रांतिक सभा के क्लर्क मौजीलाल को रखा।

28से 31 मार्च 1908 तक बाबू देवकुमार जी जमींदार, आरा के सभापतित्व में महासभा का बारहवां अधिवेशन हुआ। अधिवेशन में सभापति के नाम ए.एच.बी. अंडर सेक्रेट्री गवर्नमेंट बंगाल का पत्र दिनांक 24/03/1908 का आया था। इसमें कहा गया बीच की टेकरी का रास्ता छोड़ दिया जाय तथा इसे भी जैनी लोग अच्छे दाम देकर सदा के लिए खरीद लें या पट्टे पर ले लें। पश्चिमी पहाड़ योरोपियन व पूर्वी देशियों के बंगलों के लिए दिया जाए तथा नीमियाघाट से नई बस्ती तक नई सड़क बनें। अंत में लिखा था यह भारत सरकार का हुक्म है, इसे सभी जैनियों में प्रचारित किया जाएऔर जो कुछ कहना हो वह कोर्ट ऑफ वार्ड्स से शीघ्र कहा जाए। तब महासभा ने प्रस्ताव नम्बर 14 इस आशय का पास किया कि इस हुक्म से सभी जैनियों के हृदय पर चोंट लगी है। यह पर्वत अनादिकाल से पूज्य और पवित्र है। इस पर ऐसा कृत्य किसी मुसलमान राजा ने भी नहीं किया। प्रस्ताव की नकल इण्डिया गवर्नमेंट व स्टेट सेकेट्री लंदन को भेजी गयी तथा समाज से अपील की गयी की वह जन-धन और सहानुभूति से पूर्ण सहयोग करें। इस मेले में 12000 जैनियों के भारी क्षोभ और उनके क्लेश चित्त से निकले हुए वचनों को सुनकर और भी सेठजी को चिंत्ता होती थी कि क्या होने वाला है ? लोगों का कहना था कि बंगले बनने लगे तो हम डट जायेंगे, मार खायेंगे, मरेंगे। परंतु पूज्य ध्यान की भूमि को गृहस्थ जीवन, पशु हिंसा, मदिरापान व भोग विलास का स्थान कभी न बनने देंगे। रंगपुर के जैन भाइयों ने इस उपसर्ग को सुनकर विलायती नमक बेचना बंद कर दिया, जो वर्ष में रु. 2000 का खपता था। माणिकचंद जी ने बम्बई आकर 9

अप्रैल 1908 को उन्होंने हीराबाग में समाज की सभा बुलाई। लाला मिश्रीलाल जी सभापति बनाए गए। अब केवल दो ही उपाय है—एक मुकदमा चलाना, दूसरा अपने प्राणों का विसर्जन करके पर्वत की रक्षा करना। दोनों की नकल भारत सरकार को भेज दी गयी। सेठ माणिकचंद जी ने इस सरकारी धर्म घातक आज्ञा की जानकारी समाज की सभी पंचायतों को भेज दी। 30 अप्रैल 1908 को बम्बई कान्फ्रेंस का सम्मेलन धूलिया में रायबहादुर जोशी के सभापतित्व में हुआ। उसमें येवला के दामोदर बापू ने प्रस्ताव का समर्थन सेठ बालचंद हीराचंद, मुंशी गुलाम मोहम्मद तथा लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने किया। जैनियों के चारों ओर विरोध को देखते हुए बंगाल के छोटे लॉट ने 16 मई 1908 को कलकत्ते में बाबू धन्नूलाल, परमेष्टीदास, महाराज बहादुर सिंह, राय मनीलाल व नाहर बहादुर से बात की। उसी दिन एक पत्र वी. एकालिंस प्राईवेट सेक्रेट्री ने राय मनीलाल के नाम से भेजा जिसकी कॉपी सेठ माणिकचंद जी को भी मिली, इसमें आश्वासन दिया गया कि समाज ने सम्पूर्ण पर्वत को खरीदने व हमेशा के लिए पट्टे पर लेने का जो कहा है, उस संबंध में कमिश्नर से रिपोर्ट की जायेगी। जब तक जमींदार पालगंज व कार्ट ऑफ वाड्स से जांच न हो मामला यथावत् रहेगा। पत्र से इतना स्पष्ट हो गया कि सम्पूर्ण पर्वत को पट्टे पर लेने का प्रयत्न होना चाहिये। सेठ जी ने कलकत्ते वालों को लिखा कि खुलासा आज्ञा निकालना चाहिए कि बंगले न बनें।

बम्बई के गवर्नर ने प्रमुख जैनियों से नाराजगी का कारण पूछा तो बताया गया कि लोग बंगले बनाने की आज्ञा से घबड़ा गए हैं। बम्बई गवर्नर ने बंगाल गवर्नर से मालूम करके एक पत्र जून 1908 में वीरचंद सी. आई. ई. को लिखा, जो अखबारों में भी छपा। इसमें लिखा था कि जैनियों ने पालगंज राजा से पहाड़ खरीदने का कोई प्रबंध नहीं किया है, कि जिससे आप पहाड़ खरीद लेवें या जिससे राजा पर्वत पर बंगले बनाने का विचार छोड़ देवें। पहाड़ जब तक कोर्ट ऑफ वार्ड्स के अधीन है, इस मामले को रोक देना ठीक समझा जाता है। (The question should be dropped at any rate so long as the property under the court of wards at present) सरकार जैनियों को हानि पहुंचाना नहीं चाहती है। मामला जमींदार और जैनियों के बीच का है। आशा है आपस में योग्य फैसला जल्द ही हो जायगा। जैनी सरकार के प्रति सदा वफादार होंगे, जिस सरकार में उन्होंने उन्नति प्राप्त की है।

11 जुलाई 1908 को छोटे लॉट ने कलकत्ते में दिगम्बर-श्वेताम्बर से फिर मुलाकात की। धन्नूलाल व परमेष्टीदास, शीतलप्रसादजी व देवीसहायजी, लॉट साहब से मिले। उन्होंने कुछ भी निश्चित् बात नहीं कहीं तथा रात्रि में फिर बुलाया। इसके बाद छोटे लॉट सर फ्रेजर ने शिखर जी मामले पर रांची में जैन समाज के प्रतिनिधियों को बुलाया। 16 सितम्बर 1908 को वार्तालाप हुआ। कुल पूरे पहाड़ को पट्टे पर देने की बात हुई। राजा पालगंज को भी बुलवाया गया था। लॉट सा. ने दो लाख रु. नगद व पन्द्रह हजार वार्षिक मांगे। जैनियों ने अपनी सामर्थ्य न समझकर इंकार किया-मामला तय न होकर यों ही रह गया।

रांची से सेठ माणिकचंद जी 22 सितम्बर 1908 को प्रयाग आ गये। रात्रि में बाबू शिवचरण लाल रईस के मकान पर सभा हुई। शीतलप्रसाद जी ने रांची में हुए वार्तालाप की जानकारी दी। बताया गया कि हमने अर्जी दी है, जिसमें सदा के लिए झगड़ा मिटाने के लिए हम ढाई लाख रु. नगद और चार हजार रु. वार्षिक देना चाहते हैं। अभी मामला तय नहीं हुआ है। सन् 1908 में पर्वत रक्षा कमेटी, कलकत्ते में सक्रिय थी। इस बीच पहले तार से व बाद में पत्र से मालूम हुआ कि लॉट सा. ने दिगम्बर जैनियों को पूर्ण पर्वत का पट्टा दे दिया। 50000 रु. नजराना के जमा करा लिये और 12000रु. प्रतिवर्ष पालगंज स्टेट में देने का ठहराव हुआ। जो पट्टे उस वक्त तक थे, उनको कायम रखकर जो आमदनी होगी, सो दिगम्बरियों के मिले। यह स्वीकृति एफ. डब्ल्यू. ड्यू चीफ सेकेट्री बंगाल सरकार ने अपने पत्र नम्बर 4702 दिनांक 30/नवम्बर/1908 को बाबू परमेष्टीदास सरावगी और धन्नूलाल अग्रवाल को दी तथा पत्र नम्बर 4791 दिनांक 30/ नवम्बर/1908 से उक्त सेकेट्री ने सरकारी सालीसिटर को लिखा की डिप्टी कमिश्नर की राय से लिखा-पढ़ी करा लेवें। पत्र को पढ़ कर सेठ माणिकचंद जी की बहुत बड़ी चिंता दूर हुई और निश्चित हो गया कि अब पूज्य पर्वत पर बंगलों की बस्ती नहीं बनेगी। 26 अक्टूबर 1910 को 300 लोगों की उपस्थिति में दिल्ली की लक्ष्मीनारायण धर्मशाला में सभा हुई। हजारीबाग, कलकत्ता, इन्दौर,लखनऊ आदि से लोग आये थे। 1000 जैनी जमा हुए थे। सेठ माणिकचंद जी के प्रस्ताव का रायबहादुर घमण्डी लाल जी के समर्थन से म्युनिसिपल कमिश्नर व गवर्नमेंट ट्रेजरर दिल्ली के लाला ईश्वरीप्रसाद जी रईस को सभापति और बाबू धन्नूलाल अटार्नी को सभा का उप सभापति बनाया गया। सेठ माणिकचंद जी के प्रस्ताव तथा बाबू धन्नूलाल अटार्नी तथा अर्जुन लाल बी.ए. के समर्थन से से यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ—"दिगम्बरियों को पैरवी के लिये कोई समय न दिया जाकर शिखर जी पहाड़ का पट्टा रद्द किया गया। इससे यह सभा क्षोभ प्रगट करती है तथा पुन: विचार के लिये निवेदन करती है। इसकी नकल तार द्वारा भारत सरकार को भेजी गयी। इसके बाद सेठ हुकुमचंद जी के प्रस्ताव व बहादुर सल्तान सिंह मेरठ के समर्थन से बड़े लॉट साहब को मेमोरियल भेजने का निश्चय हुआ इसकी एक सब कमेटी बनी। तीसरा प्रस्ताव रेग्युलेशन भेजे जाने का हुआ तीर्थक्षेत्र कमेटी को पत्र-व्यवहार का अधिकार दिया गया। 28 दिसम्बर 1911 के दिन कलकत्ते में प्रमुख लोगों की कमेटी गठित की गयी। सेठ माणिकचंद जी, सेठ बालचंद रामचंद और बालचंद नेमचंद,शोलापुरवालों के साथ कलकत्ते पहुंचे। इसी दिन 28 दिसम्बर को चर्चा हुई। बाबू धन्नूलाल ने भरोसा दिया कि बंगाल सरकार से बातचीत हो रही है आप चिंता न करें। सेठ जी यहां दो दिन ठहरे और श्वेताम्बरी भाईयों से समन्वय की भी चेष्टा की परंतु कोई सफलता न मिली। जब से वाईसराय लार्ड मिन्टों ने श्री शिखरजी पर्वत का पट्टा देने का बंगाल गवर्नमेंट के हुक्म को रद्द किया था। तब से सेठजी को बहुत बड़ी चिंता थी। सेठ जी उस हुकुम को रद्द कराने में लगे थे। क्योंकि उस पट्टे के लिए 50000 रु० का बयाना दिया जा चुका था। इसलिये बाबू धन्नूलाल जी ने 16 मार्च 1911 को अदालती नोटिस भी बंगाल गवर्नमेंट को दिया था। साथ ही 16 अक्टूबर 1912 को कमेटी के सभासदों से यह प्रस्ताव भी स्वीकार करा लिया गया था कि गवर्नमेंट पर मुकदमा चलाया जाए।

दूसरी तरफ शिखरजी पहाड़ का जो सर्वे हुआ था उसमें लिखा था कि

पहाड़ के मंदिर और धर्मशालाओं में सभी जैनियों को बिना किसी की इजाजत के जाने, पूजन करने व ठहरने का हक्क है। इस बात पर आपत्ति लेकर श्वेताम्बर लोगों ने 7 मार्च 1912 को मुकदमा नम्बर 288 दायर कर दिया। आपत्ति ली गयी कि दिगम्बरियों को श्वेताम्बरियों की इजाजत से पूजने का हक्क है,सो भी उनकी ही श्वेताम्बरियों की आम्नाय के अनुसार। इस मुकदमे से सेठ जी को और भी भारी चिंता हो गयी। आपने लाला प्रभुदयाल की सलाह से प्रमुख सभासदों की बैठक 8 व 9 फरवरी 1913 को कानपुर में बुलाई। बैठक में सेठ माणिकचंदजी, बाबू धन्नूलाल जी, ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी , सहारनपुर से जम्बूप्रसाद जी आदि 14 साथियों के साथ शामिल हुए।

लाला सुल्तानसिंह रईस, देहली के सभापतित्व में तीन प्रस्ताव पास हुए:-

1. शिखरजी की प्रतिष्ठा में जो रुपया आया था, वह पर्वत रक्षा फण्ड में मिलाया जाए।

2. मुकदमा नम्बर 288 चलाया जाए तथा इसका खर्चा आधा-आधा तेरापंथी व बीसपंथी कोठी से लिया जाए।

3. मुकदमें के प्रबंध के लिये 15 महाशयों की कमेटी बनायी जाए जिसके मंत्री व खजांची सेठ हरसुखदास, हजारीबाग हो।

नये वर्ष अर्थात् 1914 के प्रारंभ से सेठ जी को शारीरिक कमजोरी के कारण चक्कर आ-जाया करते थे। आपको चिंता श्री सम्मेदशिखर पर्वत की रक्षा की थी। लाला प्रभुदयाल की प्रेरणा व तीर्थक्षेत्र कमेटी का प्रस्ताव नम्बर 2 दिनांक 16/ अक्टूबर/1912 के अनुसार 5 सितम्बर 1913 को हजारीबाग कोर्ट में पर्वत का पट्टा कायम रखा जावे या उसका हर्जाना रु. दो लाख मिले, ऐसा मुकदमा बाबू धन्नूलाल और सेठ परमेष्टीदास की ओर से राजा रणबहादुरसिंह, पालगंज और बाबू कृष्णचंद्र घोष मैनेजर कोर्ट ऑफ वार्ड्स पर लगा दिया गया। एक अन्य मुकदमा जो श्वेताम्बरियों ने दिगम्बरियों को स्वतंत्रता से पूजन का हक न होने का किया था, कोर्ट में अटका पड़ा था। इनकी पैरवी अच्छी तरह से हो, जिससे परम् पूज्य पर्वत की रक्षा हो जाये और दिगम्बर जैनियों की भक्ति में कभी कोई अन्तराय न पड़े।

दूसरी तरफ सन् 1918 में राजा पालगंज से खरीदकर कस्तूरभाई के नाम से कल्याणजी आनंद जी ट्रस्ट ने राजा पालगंज से दो लाख रुपयों में पहाड़ खरीद लिया। खरीदने के पश्चात् दिगम्बरियों को पारसनाथ पर्वत पर पूजा-पाठ करने जाने से रोकने के लिये पहाड़ पर रास्ते में में गेट लगा दिये। दरबान नियुक्त कर दिये ताकि कोई भी व्यक्ति बिना आदेश से ऊपर पहाड़ पर नहीं जावेगा। दिगम्बरियों में क्षोभ फैल गया। उन्होंने मुकदमा लगा दिया। निर्णय हुआ कि दिगम्बर सम्प्रदाय को पूजा-पाठ करने, पर्वत की यात्रा करने का पूर्ण अधिकार है तथा रास्ते पर गेट नहीं लगाया जा सकता।

प्रो. राधाचरण गुप्त, झाँसी का निधन

प्रो. राधाचरण गुप्त, झाँसी जैन साहित्य विशेषत: जैन गणित के प्रमुख विद्वान थे। उन्होंने जैन गणित विषयक लगभग ८० शोधपत्र, समीक्षायें, रिपोर्ट आदि लिखी हैं जो देश–विदेश के अनेक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही। उन्होंने १९७३ में जैन गणित विषयक शोधपत्र विज्ञान भवन में प्रस्तुत किया था। जो १९७५ में प्रकाशित हुआ था। झाँसी निवासी प्रो. गुप्त के ५ सितम्बर को निधन से समाज ने एक जैन गणित का एक अधिकारी विद्वान खो दिया है।

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता के पुरस्कार

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास में जैनाचार्यों का योगदान शीर्षक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी के ससंघ सान्निध्य में २ दर्जन से अधिक विद्वानों की उपस्थिति में पुरस्कार समर्पण समारोह १ सितम्बर २०२४ को अयोध्या में आयोजित किया गया। परिणाम निम्नवत् रहा।

श्रीमती रेखा पतंग्या, इन्दौर	प्रथम पुरस्कार	₹ ११०००/–
डॉ. रुचि जैन, दिल्ली	द्वितीय पुरस्कार	₹ ७०००/–
सुश्री आराधना जैन, ग्वालियर	तृतीय पुरस्कार	₹ ५०००/–

इसके अतिरिक्त ५ अन्य विद्वानों को ₹ १०००/– प्रत्येक के सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किये गये।

विनम्र श्रद्धांजली

परम दानवीर तीर्थभक्त श्री धर्मवीर जी लखनऊ वालों का दुखद निधन

शाश्वत तीर्थ अयोध्या एवं भगवान संभवनाथ की जन्मभूमि श्रावस्ती के विकास में मुक्त हस्त से दान देने वाले इन दोनों तीर्थों के प्रबन्धन से सक्रिय से जुड़े उत्तर प्रदेश के लोक निर्माण विभाग के प्रमुख अभियंता इंजी. श्री धर्मवीर जी जैन, लखनऊ का दिनांक 05.09.2024 को निधन हो गया। आप 94 वर्ष की आयु में भी समाजसेवा एवं तीर्थ भक्ति की उत्कट भावना रखते थे। अमन चेरिटेबल ट्रस्ट, लखनऊ के माध्यम से प्रतिवर्ष सैकड़ों छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करते थे। श्री धर्मवीर जी भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम सम्माननीय सदस्य थे एवम् आपके दोनों सुपुत्र भी तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्माननीय सदस्य हैं साथ ही आपने लखनऊ एवम् आसपास के अनेकों महानुभावों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जोड़कर सदस्य बनाया है। भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक विनयांजलि प्रकट करती है।

उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड अंचल से श्री जवाहरलाल जैन निर्विरोध अध्यक्ष पद पर सुशोभित

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड अंचल के अध्यक्ष पद के चयन करने के लिए दिनांक १८ अगस्त, २०२४ को श्री जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में साधारण सभा का अधिवेशन संपन्न हुआ जिसमें चुनाव अधिकारी श्री राकेश कुमार जैन ने बताया कि मुझे तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री संतोष जैन पेन्ढ़ारी द्वारा उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल के अध्यक्षीय चुनाव की प्रक्रिया हेतु मनोनीत किया था। उनके द्वारा निर्देशित कार्यक्रम के अनुसार 10 अगस्त 2024 तक अध्यक्ष पद हेतु केवल एक नामांकन श्री जवाहर लाल किरोड़ीमल जैन, 128, सरावगीवाड़ा, सिकन्द्राबाद का प्राप्त हुआ। 12 अगस्त 2024 नामांकन वापिस लेने की अंतिम तिथि थी। उस समय तक केवल श्री जवाहर लाल जी का नामांकन ही शेष रहा। इस प्रकार आज पूर्व निर्धारित ऐजेन्डें के अनुसार मैं राकेश कुमार जैन चुनाव अधिकारी के रूप में घोषणा करता हूं कि आगामी पांच वर्ष के लिए श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद को उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल का अध्यक्ष निर्विरोध रूप से घोषित करता हूं।

उनकी घोषणा के पश्चात उपस्थित समुदाय ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया। चुनाव पर्यवेक्षक श्री आलोक कुमार जैन, शामली ने अपने उद्बोधन में कहा कि चुनाव संबंधी समस्त प्रक्रिया पूर्ण पारदर्शिता के साथ हुई है। मैं इस चुनाव प्रक्रिया को अपनी सहमति प्रदान करता हूं तथा श्री जवाहर लाल जैन सिकन्द्राबाद के अध्यक्षीय निर्वाचन का अनुमोदन करता हूं। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन ने चुनाव अधिकारी एवं चुनाव पर्यवेक्षक का माल्यार्पण कर स्वागत किया तथा उनके इस कार्य के लिए आभार प्रकट किया।

अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री जवाहर लाल जैन ने बताया कि आज समय की आवश्कता है कि हम तीर्थक्षेत्र कमेटी को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से मजबूत करें तभी संस्था तीर्थों के संरक्षण एवं विकास का कार्य सुचारू रूप से कर पाएगी। मैं उपस्थित सभी साथियों का बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूं जिन्होनें यहां उपस्थित होकर मेरा उत्साहवर्धन किया है। अंत में महामंत्री ने सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए सभी को भोजन के लिए आमंत्रित किया तथा शांतिनाथ भगवान की जय के साथ सभा का विसर्जन हुआ।

सभा की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल के कार्याध्यक्ष श्री एम.एस जैन, मेरठ ने की। मुख्य अतिथि के रूप में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन ने अपना स्थान ग्रहण किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जीवेन्द्र जैन, गाजियाबाद मंच पर आसीन हुए। चुनाव अधिकारी श्री राकेश जैन, मेरठ एवं चुनाव पर्यवेक्षक श्री आलोक जैन, शामली मंचासीन हुए। जम्बूद्वीप संस्थान के प्रबन्धमंत्री श्री विजय जैन एवं कोषाध्यक्ष श्री सुनील कुमार जैन सर्राफ, मेरठ मंच पर विराजित हुए। सभा का संचालन महामंत्री श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ ने किया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल से अध्यक्ष पद पर श्री डी. के. जैन निर्विरोध सुशोभित

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल की अध्यक्ष निर्वाचन हेतु साधारण सभा १८ अगस्त रविवार गोम्मटगिरी तीर्थक्षेत्र पर प्रारंभ हुई। प्रारंभ में मंगलाचरण श्रीमती अनामिका बाकलीवाल ने किया चुनाव अधिकारी श्री महावीर बैनाडा, सहायक श्री डी.के. जैन ने चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ कर उपस्थित सदस्यों को जानकारी दी की तीन फार्म जमा हुऐ थे उसमें श्री अमिताभ मन्या, भोपाल, श्री मांगीलाल रतलाम से और श्री दिनेश कुमार जैन (डीके जैन,)इन्दौर से उम्मीदवार थे। श्री मन्याजी और मांगीलालजी ने अपना फार्म बापस ले लिया। एक मात्र उम्मीदवार दिनेश कुमार जैन शेष रहने से उन्हें निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

इस अवसर पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री डीके जैन ने सबका हृदय से धन्यवाद देते हुए कहा कि आपको विश्वास दिलाता हूं की मध्यांचल तीर्थ क्षेत्र कमेटी अपनी पूरी क्षमता तीर्थो के विकास में लगाएगी। सबसे ज्यादा दिगम्बर जैन तीर्थ एवं अतिशय क्षेत्र बुंदेलखंड में स्थित है जो कि अपेक्षाकृत वित्तीय दृष्टि से कमजोर है। बुंदेलखंड में जितनी जैन प्रतिमाएं जमीन के ऊपर हैं उससे कई गुना भूगर्भ में है, जिनका उद्धार किया जाना है। इस हेतु योजना बनाएंगे। जो प्रतिमाएं दृष्टिगोचर हैं उनमें से भी अधिकांश भग्नावशेष अवस्था में है जिन्हें ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टिकोण से भी जीर्णोद्धार किया जाना है। आप सबके साथ मिलकर योजना बद्ध तरीके से यह काम करने के लिए मैं संकल्पित हूं।

हमें उचित इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना है। आधुनिक सुविधायुक्त धर्मशालाएं का भी निर्माण किया जाना है क्षेत्र की कमेटियों के साथ मिलकर योजना बनाने के लिए संकल्पित हूं।

एक टीम प्रस्तावित है जिसमें इंटीरियर डेकोरेटर, आर्किटेक्ट एवं समाज जनों का सहयोग लिया जाएगा, जो इन क्षेत्रों की यात्रा कर योजना कमेटी के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। केंद्रीय पदाधिकारियों के साथ मिलकर इसे मूर्त रूप दिया जाएगा।

इन सब कार्यों के लिए विपुल धनराशि की आवश्यकता होगी हम हमारे आचार्य एवं मुनिसंघों एवम समाज श्रेष्ठियों से निवेदन करेंगे कि कुछ राशि इस कार्य के लिए भी आरक्षित करें ,ताकि नवीन तीर्थ के निर्माण के साथ हम अपने पुरातन तीर्थ का भी संरक्षण एवं संवर्धन कर सके। हाई कोर्ट एवं सुप्रीम कोर्ट के केसेस जिसमें श्री सम्मेद शिखर जी, गिरनार जी ,अंतरिक्ष पारसनाथ एवं केसरिया जी से संबंधित है उसके लिए भी हम सब मिलकर काम करेंगे।

अंचल के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर अशोक बड़जात्या, नरेंद्र वेद, कैलाश वेद, सुरेन्द्र बाकलीवाल, प्रदीप बड़जात्या, अनिल जेनको, मुकेश टोंग्या, निर्मल सेठी, नकुल पाटोदी, हसमुख गांधी, डॉ. अनुपम जैन, प्रमोद पापडीवाल, अशोक जैन जैनम, कैलाश सेठी, मनोज पाटोदी, वीरेंद्र बड़जात्या, सुदीप जैन, मनोहर लाल जैन, योगेश जैन, रमेश गंगवाल, राजकुमार घाटे, मनोज बाकलीवाल, मांगीलाल जैन रतलाम, राजकुमार बड़जात्या, नीलेश छापरिया सहित सेकड़ो सदस्य उपस्थित थे। संचालन डॉ संजय जैन ने किया। आभार मनोज पाटोदी ने माना।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल से श्री राजकुमार कोठ्यारी निर्विरोध अध्यक्ष घोषित

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के आज संपन्न हुए चुनाव में वास्तुविद राजकुमार कोठ्यारी निर्विरोध अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए चुनाव अधिकारी श्री अनिल जैन पूर्व आईपीएस अधिकारी ने भट्टारक जी की नसियां में आज तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के सदस्यों की उपस्थिति के बीच घोषणा की । तत्पश्चात निर्वाचित अध्यक्ष श्री राजकुमार कोठयारी ने तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्धन के सम्बन्ध में जानकारी दी और अपील की तीर्थों की रक्षा एवं सुरक्षा ही हमारा प्रथम कर्तव्य है । मंगलाचरण पं. डॉ. विमलकुमार जैन ने किया एवं संचालन श्री मनीष वैद्य ने किया । इस अवसर पर राजस्थान के कोटा, अजमेर, दूदू, किशनगढ़, दौसा, उदयपुर, दौसा, उदयपुर, बांसवाडा, फागी, केसरिया जी आदि से उपस्थित थे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कर्नाटक अंचल से श्री विनोद बाकलीवाल निर्विरोध अध्यक्ष पद पर सुशोभित

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कर्नाटक अंचल के दिनांक 24 अगस्त 2024 को होने वाले वर्ष 2024,/28 कार्यकाल हेतु अध्यक्ष पद के लिए चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराने हेतु भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुख्य कार्यालय मुम्बई द्वारा मुझे चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया था। जिसके लिए नामांकन दाखिल करने का समय दिनांक 17 अगस्त 2024 सायंकाल 05:00 बजे तक का समय सुनिश्चित किया गया था। दिनांक 17 अगस्त 2024 तक श्री विनोद कुमार जैन बाकलीवाल, वीर सदन डी-9, ।४ कास, माडल हाउस, इन्द्रा नगर, मैसूर (कर्नाटक), श्री सुबोध कुमार जैन, 1044 श्री जिनकृपा काम्पलैक्स, तुमकुरू (कर्नाटक) के दो ही नामाकन प्राप्त हुए थें। श्री सुबोध कुमार जैन न अपना नामांकन पत्र 17 अगस्त 2024 को वापिस ले लिया। तय समय सीमा समाप्त होने के पश्चात्केवल एक ही नामांकन पत्र श्री विनोद कुमार जैन बाकलीवाल, वीर सदन डी-9, ।४ कास, माडल हाउस, इन्द्रा नगर, मैसूर (कर्नाटक) का रह जाने के कारण दिनांक 2 4 अगस्त 2 0 2 4 को चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। इसी सन्दर्भ में आप सभी महानुभावों की उपस्थिति में चुनाव परिणाम की विधिवत घोषणा करने के लिए पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार शनिवार दिनांक 24 अगस्त 2024 को प्रात: एक मीटिंग का आयोजन श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में किया गया है। अतः आप सभी से सादर निवेदन है कि कृपया इस आयोजन में उपस्थित रहकर चुनाव परिणाम की औपचारिक घोषणा के कार्यक्रम के साक्षी बनें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पूर्वांचल से श्री कन्हैयालाल जी जैन निर्विरोध अध्यक्ष पद पर सुशोभित

दिनांक २५ अगस्त, २०२४ को शास्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी की पावन भूमि शास्वत ट्रस्ट निहारिका परिसर (मधुबन) में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पूर्वांचल के अध्यक्ष पद के चुनाव हेतु साधारण सभा का आयोजन संपन हुआ जिसमें चुनाव अधिकारी श्री सुरेश कुमार झांझरी कोडरमा ने चुनाव सम्बंधित जानकारी देते हुए पूर्वांचल के अध्यक्ष पद के लिए श्री कन्हैयालाल जी सेठी के नाम की निर्विरोध निर्वाचित होने की घोषणा की तदुपरांत सभी ने करतल ध्वनि से हार्दिक स्वागत करते हुए अपनी-अपनी शुभकामनाएं प्रकट की।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अंचलों के चुनाव संपन्न महाराष्ट्र अंचल से श्री मिहिर गांधी को निर्विरोध अध्यक्ष के रूप में चुना गया

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पिछले १२५ वर्षों से तीर्थक्षेत्रों, धरोहरों के विकास और संरक्षण के लिए काम कर रही है जिसके महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया पिछले दो महीने से चल रही थी। रविवार को दहिगांव में साधारण सभा में चुनाव प्रक्रिया संपन्न हुई, जिसमें सोलापुर जिले के अकलुज से श्री मिहिर गांधी को पांच साल के लिए निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। चुनाव अधिकारी श्री सुधीर काले ने इस संबंध में घोषणा की।

बैठक का आयोजन श्री जम्बूकुमार गौतमचंद दोशी गुरुकुल के सभागार में किया गया। अतिशय क्षेत्र दहिगांव जैन मंदिर ट्रस्ट के बाहुबली चंकेश्वर ने दीप प्रज्वलित कर सभी का स्वागत किया। मंदिर समिति एवं तीर्थ स्थल की ओर से गणमान्य व्यक्तियों एवं सदस्यों ने समिति की ओर से प्रस्तावना डॉ.महावीर शास्त्री ने दी।

मुंबई, पुणे, परभणी, च. संभाजीनगर, लातूर, सोलापुर, फलटन, बारामती, नीरा, अकलुज, म्हसवड, नैटपुते, आष्टी, मिराजगांव, अहमदनगर, वडगांव, टेंभुर्नी, मोडनिंब, पंढरपुर, इंदापुर, पुणे सहित पूरे महाराष्ट्र से सदस्य थे। इस अवसर पर उपस्थित मंदिर समिति एवं तीर्थ समिति की ओर से उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का सम्मान किया गया।

निवर्तमान अध्यक्ष श्री अनिल जैन जमगे ने अपने कार्यकाल में किये गये कार्यों की समीक्षा पढ़कर सुनाई एवं श्री रमणिकभाई कोठाडिया, डॉ. विकास शाह (वालचंदनगर), रवींद्र देवमोरे, महेंद्र शाह (मुंबई)सुजाताताई शाह (पुणे) पवन अंबुरे (परभणी) श्रीमती कंचनमलाताई संघवे (लातूर), डॉ. श्रेणिक शाह (इंदापुर)इन सभी ने नए अध्यक्ष श्री मिहिरभाई गांधी का मार्गदर्शन किया और शुभकामनाएं दीं।

पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री मिहिर गांधी ने बताया कि वे अगले पांच वर्षों के लिए कार्य की योजना कैसे बनाएंगे और अधिक से अधिक तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनने की अपील की।

बैठक के अंत में विभिन्न संगठनों के माध्यम से नये अध्यक्ष मा. मिहिर गांधी का सम्मान किया गया तथा आये हुए सभी सदस्यों के लिए नाश्ता एवं भोजन की व्यवस्था की गई।

कार्यक्रम को सफल बनाने में दहीगांव जैन मंदिर ट्रस्ट कमेटी के सदस्यों के साथ-साथ श्री सन्मति सेवा दल की सभी दादी-नानी शामिल हुई। संचालन प्रो.मनीष शाह ने किया।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, केरल & पुडुचेरी अंचल के अध्यक्ष पद पर श्री संजय ठोलिया निर्विरोध निर्वाचित

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भारत देश के पांच राज्यों मैं (तमिलनाडु, तेलांगाना, पुडुचेरी, आंध्रा, केरला) धर्म की पताका फहराते हुए निर्विरोध निर्वाचित ठोलिया परिवार के एवं दिगम्बर जैन समाज़ पुड्डुचेरी के गुरु भक्त धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में अग्रणीय रहते हुए सभी कार्य को अति उत्साहित तरीके से निर्विघ्न संपन्न करने की क्षमता रखने वाले श्री संजय जी ठोलिया को उनके निर्विरोध चुनावी जीत के लिए साधारण महासभा का अधिवेशन दिनांक 11अगस्त 2024 स्थान विजयमति भवन, पुडुचेरी में आयोजन किया गया। इस अधिवेशन की मुख्य भूमिका तमिलनाडु भामाशाह, दानवीर, परम सम्मानीय श्री एम.के. जैन, चेन्नई रहे इनके साथ इस अधिवेशन के अतिथि के रूप में शोभा बढ़ाने वाले निम्न महानुभाव साथ थे। निवर्तमान अध्यक्ष दिनेश जी सेठी चेन्नई, पुडुचेरी जैन समाज़ अध्यक्ष रिकबजी पाटौदी, पुडुचेरी जैन समाज़ अध्यक्ष सोहनलाल जी कासलीवाल, मदुरई से महावीर प्रसाद जी पाटनी, सेलम से सुरेश जी कासलीवाल, चेन्नई से संगीता जी, दिगम्बर जैन समाज़ पुडुचेरी से आरती पाटौदी एवं आरती कोठारी ने बहुत सुंदर तीर्थ वंदना का मंगलाचरण प्रस्तुत किया। चुनाव अधिकारी श्री एम.के. जैन ने अपने स्वर्णिम विचारो के साथ संजय जी को आगामी पाँच वर्षों के लिए पांच राज्यों में अध्यक्ष पद से सुशोभित किया और कहा कि

सरलतम बात सुननी हे तो इनसे बात कर लेना
कोई सौगात चुननी हो तो इनसे बात कर लेना
कि कैसे मुस्कराकर जिन्दगी में जीना चाहिए
खुशी हर बार चुननी हो तो इनसे बात कर लेना

उपस्थित सभी महानुभावों ने नवनिर्वाचित्त अध्यक्ष को माला हार पहनाकर अपनी शुभकामनाएं प्रकट की|

सम्मेदशिखर पर्वत स्थित पुष्पदंत स्वामी टोंक पर चढ़ाया गया निर्वाण लाडू

जैन धर्मावलंबियों के महानतम तीर्थस्थली श्रीसम्मेद शिखर जी पर्वत से ९वें तीर्थंकर १००८ श्री पुष्पदंत स्वामी सुप्रभ कूट से शुक्ल पक्ष के अष्टमी को मूल नक्षत्र में १००० मुनिराजों के साथ मोक्ष पद को प्राप्त किया था जहां उनके टोंक बने हुए हैं एवम चरण चिन्ह विद्यमान हैं। दिनांक ११ अगस्त २०२४ को प्रातः टोंक की साफ सफाई, धुलाई के पश्चात निर्वाण कल्याणक महोत्सव विधि विधान से निर्वाण लाडू निर्वाण कांड पढ़ कर चढ़ाया गया। इसके पहले शांतिधारा कि गयी। लाडू चढ़ाने के बाद पूजन कर आरती हुई। एक बात की विशेष जानकारी मिली कि इस तिथि को कई साल से मौसम खराब रहता है। कम ज्यादा वर्षा जरूर होती है। निर्वाण लाडू की बोली इंदौर से पधारे श्री अतुल बघेरवाल परिवार ने ली। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पुजारी श्री अशोक जैन ने कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया साथ में कमेटी के पर्वत इंचार्ज श्री राधेश पाठक, टोंक सुरक्षा गार्ड, माली इत्यादि उपस्थित रहे|

सुमन कुमार सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक शिखर जी कार्यालय

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी

अंचल के

निर्विरोध-नवनिर्वाचित अध्यक्ष

श्री पारस जैन जी बज
गुजरात

संजय ठोलिया
पांडिचेरी तमिलनाडु

जवाहर लाल जैन
उत्तर प्रदेश उत्तराखंड

दिनेश कुमार जैन
(डी. के.) इंदौर

राज कुमार जी कोठारी
राजस्थान

विनोद बाकलीवाल
कर्नाटक

कन्हैया लाल जी सेठी
बिहार झारखंड

प्रद्युम्न जैन दिल्ली

मिहिर गांधी, अकलुज
महाराष्ट्र

हार्दिक बधाई

जैन समाज की अग्रणी संस्था भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी में अंचल के अध्यक्ष पद को निर्विरोध ग्रहण कर कर आप सभी ने हमारा मान बढ़ाया है। आपका तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षण संवर्धन में सहयोग सर्वोच्च रहेगा मै ऐसी आशा करता हूँ |
पुनः आपको अनंत शुभकामनाएं

जम्बू प्रसाद जैन- राष्ट्रीय अध्यक्ष

संतोष पेंढारी- राष्ट्रीय महामंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुंबई

#BPBMEDIA_AGRA_8899344441